हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार, 6 जुलाई 2025

तापमान
अधिकतम 38.1 डिग्री
न्यूनतम 22.3 डिग्री

11 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में अधूरी सड़क से लोग परेशान

12 वंचित अनुसूचित जाति के सपनों को साकार ..

खबर संक्षेप

10 को कॉलेज में ओपन काउंसलिंग से दाखिला

सांपला। जो छात्राएं किसी वजह से कॉलेज में दाखिले लेने से वंचित रह गई, वह अब 10 जुलाई को ओपन काउंसलिंग में हाजिर हो कर अपना दाखिला ले सकती हैं। सर छोटू राम कन्या महाविद्यालय में बीए, बीएससी, बीकॉम, हिस्ट्री ऑनर्स की कुछ सीटें अभी खाली हैं। प्राचार्य डॉक्टर संतोष हुड्डा ने बताया कि 10 जुलाई को कॉलेज में ओपन काउंसलिंग होगी। जो भी छात्र कॉलेज में एडमिशन लेना चाहती है वह ऑनलाइन आवेदन करके काउंसलिंग में अपने दस्तावेज लेकर उपस्थित हो सकेगी।

अवैध हथियार सहित युवक गिरफ्तार

रोहतक। पुलिस ने युवक को अवैध हथियार सहित गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ महम में केस दर्ज करके कार्यवाही की गई है। आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया है। महम थाना प्रभारी सुभाष कुमार ने बताया कि मुख्य सिपाही रविन्द्र के नेतृत्व में पुलिस टीम ने खरकड़ा से मोखरा रोड खरकड़ा के पास से युवक को शक के आधार पर काबू किया गया। युवक की पहचान रितिक निवासी मोखरा खास के रुप में हुई। युवक के पास से एक देसी पिस्तौल व 5 रौंद बरामद हुआ है।

युवक को अवैध हथियार सहित किया गिरफ्तार

रोहतक। सीआईए-2 की टीम ने गश्त के दौरान युवक को अवैध हथियार सहित गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ केस दर्ज करके कार्रवाई की गई है। आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया है। सीआईए-2 प्रभारी सतीश कुमार ने बताया कि जिमखाना कल्ब के पास से युवक को शक के आधार पर काबू किया गया। युवक की पहचान शुभम निवासी खिड़वाली के रुप में हुई। नियमानुसार तलाशी लेने पर युवक के पास से एक देसी पिस्तौल व एक रौंद बरामद हुआ है। आरोपी के खिलाफ अर्बन एस्टेट में केस दर्ज करके गिरफ्तार किया गया है।

अवैध हथियार के साथ युवक गिरफ्तार

रोहतक। सीआईए-1 की टीम ने युवक को अवैध हथियार सहित गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ केस दर्ज करके कार्रवाई की गई है। आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया है। सीआईए-1 कुलदीप सिंह ने बताया कि गांव सुंदरपुर के पास से युवक को शक के आधार पर काबू किया गया। युवक की पहचान अजय उर्फ भोलू निवासी मोखरा के रुप में हुई। युवक के पास से एक देसी पिस्तौल व 4 रौंद बरामद हुआ है। आरोपी के खिलाफ सदर थाना में केस दर्ज करके गिरफ्तार किया गया है।

तीन महीने के लिए शहर से कूड़ा उठाने के लिए 2.45 करोड़ का टेंडर

लोगों को राहत, निगम की गाड़ियां आज से डोर टू डोर कूड़ा उठाएंगी

- ई-निविदा के माध्यम से पांच जोनों में एजेंसियों को सौंपा गया कूड़ा उठाने का जिम्मा
- प्रति जोन 49 लाख रुपये में हुआ कार्य आवंटित, आज से एजेंसियां लेंगी जिम्मेदारी
- आने वाले दिनों में पांच वर्षों के लिए दीर्घकालिक ठेके की निविदा प्रक्रिया पूरी की जाएगी
- आम नागरिकों से भी अपील की गई है कि वे किसी प्रकार की समस्या होने पर नगर निगम हेल्पलाइन या संबंधित अधिकारी को सूचित करें
- कूड़ा उठाने के लिए तीन एजेंसियों को कार्य सौंपा गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

नगर निगम द्वारा शहर में घर-घर से कूड़ा उठाने के कार्य को फिर से व्यवस्थित ढंग से शुरू करने की तैयारी पूरी कर ली गई है। इस संबंध में नगर निगम आयुक्त डॉ. आनंद कुमार शर्मा ने शहर को पांच अलग-अलग जोनों में बांटते हुए ई-निविदा (ई-टेंडर) के माध्यम से एजेंसियों को कार्य आवंटित कर दिया गया है। यह ठेका आगामी तीन महीने के लिए दिया गया है, जिसकी कुल लागत दो करोड़ 45 लाख रुपये है। प्रति जोन 49 लाख का खर्च आएगा। उम्मीद है कि रविवार से ही कार्य शुरू हो जाएगा। इसके लिए तीन एजेंसियों को कार्य सौंपा गया है। जानकारी के अनुसार, नगर निगम क्षेत्र में कूड़ा उठान का पूर्व ठेका 30 जून को समाप्त हो गया था। इसके उपरांत नगर निगम प्रशासन ने अपने स्तर पर और पूर्व में कार्यरत कुछ एजेंसियों की मदद से अस्थायी तौर पर कूड़ा उठाने की व्यवस्था की थी। लेकिन यह व्यवस्था अस्थायी थी और लगातार बढ़ती जनसंख्या तथा कचरे की मात्रा को देखते हुए इसे स्थायी समाधान की दिशा में नहीं माना जा सकता था। अब स्थायी समाधान की दिशा में काम करते हुए तीन महीने के लिए यह कार्य ई-निविदा के जरिए एजेंसियों को सौंपा गया है, साथ ही पांच वर्षों के लिए दीर्घकालिक ठेके हेतु भी निविदा प्रक्रिया पूरी कर ली गई है।

क्षेत्र को इन पांच जोनों में बांटा

जोन-1 वार्ड नंबर 1 से 5, जोन-2 वार्ड नंबर 6 से 9, जोन-3 वार्ड नंबर 10 से 13, जोन-4 वार्ड नंबर 14 से 17, जोन-5 वार्ड नंबर 18 से 22 इन जोनों में संबंधित एजेंसियां 6 जुलाई से कार्य प्रारंभ करेंगी। सभी एजेंसियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि वे संपूर्ण संसाधनों के साथ कूड़ा उठान कार्य सुनिश्चित करें, ताकि आमजन को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

नई व्यवस्था से होगा सुधार

नगर निगम का मानना है कि इस नई व्यवस्था से शहर की सफाई व्यवस्था में सुधार होगा और कूड़े के समय पर उठान से गंदगी, बदबू और बीमारियों की समस्या से राहत मिलेगी। इसके साथ ही नगर निगम ने लोगों से सहयोग की अपील करते हुए कहा है कि वे कूड़ा निर्धारित समय पर और निर्धारित स्थान पर ही रखें ताकि एजेंसियां समय से उठान कर सकें। शहरवासियों को अब उम्मीद है कि नई एजेंसियों के माध्यम से यह व्यवस्था पहले से बेहतर तरीके से संचालित होगी और नगर निगम की निगरानी में सफाई व्यवस्था सुचारू बनी रहेगी।

कूड़ा उठाने के अलावा लिफ्टिंग भी की जाएगी

नगर निगम की तरफ से तीन एजेंसियों को यह टेंडर जारी कर दिया गया है। जिनमें अनिल कुमार, वीरेंद्र हुड्डा और बनावल कंपनी शामिल हैं। कंपनी के कर्मचारी कंपनी ही गाड़ी का प्रयोग करेंगे। डोर टू डोर कूड़ा उठाने के लिए अलावा शहर से कूड़े की लिफ्टिंग भी की जाएगी। इसके अलावा 24 जुलाई को पांच साल के लिए टेंडर अलॉट कर सरकार को भेजा जाएगा। तब तक के लिए यह व्यवस्था की गई है।

सफाई व्यवस्था की होगी निगरानी

आयुक्त डॉ आनंद कुमार शर्मा ने यह भी बताया कि शहर में सफाई व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे इस कार्य की नियमित निगरानी करें और फील्ड विजिट के माध्यम से सुनिश्चित करें कि प्रत्येक वार्ड में समय पर कूड़ा उठाया जाए। अगर किसी एजेंसी द्वारा लापरवाही बरती जाती है, तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। आम नागरिकों से भी अपील की गई है कि वे किसी प्रकार की समस्या होने पर नगर निगम हेल्पलाइन या संबंधित अधिकारी को तुरंत सूचित करें।

ड्रेन-8 में कार पलटी, चार युवकों को बाहर निकाला, एक अभी भी लापता

- एनडीआरएफ और गोताखोरों की टीम तलाश में जुटी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

रोहतक। ड्रेन में युवक की तलाश करते एनडीआरएफ टीम व ड्रेन पर मौजूद लोग।

गांव सांघी चिड़ी रोड पर देर रात ड्रेन नंबर आठ में एक कार पलट गई, जिससे कार में सवार चार युवकों को किसी तरह बाहर निकाला गया, लेकिन एक युवक नहीं मिला, जिसकी तलाश में सुबह ग्रामीणों ने ड्रेन में उतरकर उसकी खोजबीन की, लेकिन युवक का कोई पता नहीं चला पाया। बाद में पुलिस भी मौके पर पहुंची और इस बारे में जांच पड़ताल की। देर रात पांच युवक कार में सवार होकर रोहतक की तरफ आ रहे थे, जब युवक सांघी चिड़ी रोड पर ड्रेन नंबर 8 के पास पहुंचे तो अचानक चालक का संतुलन बिगड़ गया और कार ट्रेन में पलट गई। पुलिस मौके पर कार्रवाई कर रही है और राहत एवं बचाव कार्य जारी है। घटना पता उस वक्त लगा जब पीछे आ रही है कार सवारों ने गाड़ी को ड्रेन में पलटते हुए देख लिया, उन्होंने अन्य वाहन चालकों को रुकवाया और ड्रेन से चार युवकों को बाहर निकाल लिया, लेकिन एक युवक के बारे में नहीं पता चला। इसी दौरान सूचना मिलने पर पुलिस भी मौके पर पहुंची और युवक के परिजनों को इस बारे में जानकारी दी। सुबह भी ग्रामीणों ने काफी दूर तक ड्रेन में युवक की तलाश की लेकिन जानकारी नहीं मिली।

गौड़ ब्राह्मण शिक्षण संस्थान तम्बाकू मुक्त घोषित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

गौड़ ब्राह्मण शिक्षण महाविद्यालय में एंटी ड्रग प्रकोष्ठ के तत्वावधान में नशा मुक्त महाविद्यालय विषय पर चर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें संस्था को तम्बाकू मुक्त घोषित किया। कार्यक्रम में प्राचार्या डॉ. महाश्वेता की अध्यक्षता में किया गया। इस चर्चा में एंटी ड्रग प्रकोष्ठ एवं नशा मुक्त भारत अभियान के सभी सदस्यों ने भाग लिया। डॉ. महाश्वेता ने प्रदत विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि नशा हमारे समाज को अंदर तक खोखला कर रहा है। हमारे नौजवान और बच्चे निरंतर इसकी गिरफ्त में फंसते जा रहे हैं। इसमें धूम्रपान, शराब एवं अन्य ड्रग्स शामिल हैं। सभी सदस्यों ने इस पर अपनी अपनी राय दी। चर्चा में नशे की आदत लगने के कारण एवं इसे छुड़वाने की युक्तियों पर ज़ोर दिया गया। नशा मुक्त भारत, नशा मुक्त हरियाणा अभियान पर भी सभी ने अपनी राय साझा की।

सलाहकार समिति की 5वीं वार्षिक बैठक में निर्णय

मदवि कम्युनिटी एंगेजमेंट एंड सर्विस पाठ्यक्रम शुरू करेगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

- पाठ्यक्रमों से विद्यार्थी सामुदायिक स्तर पर विभिन्न सामाजिक कार्यों से जुड़ेंगे

रोहतक। मीटिंग की अध्यक्षता करते कुलपति प्रो. राजबीर सिंह।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप स्नातकोत्तर छात्रों के लिए 4-क्रेडिट और स्नातक छात्रों के लिए 2-क्रेडिट का 'कम्युनिटी एंगेजमेंट एंड सर्विस' पाठ्यक्रम शुरू करेगा। यह निर्णय विश्वविद्यालय आउटरीच कार्यक्रम सलाहकार समिति की 5वीं वार्षिक बैठक के दौरान शनिवार को लिया गया। मीटिंग की अध्यक्षता कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने की। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी सामुदायिक स्तर पर विभिन्न सामाजिक कार्यों से जुड़ेंगे, जिससे उनमें सामाजिक जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी। यह पहल छात्रों को जिम्मेदार और सामाजिक रूप से संवेदनशील नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। बैठक को संबोधित करते हुए प्रो. राजबीर सिंह ने युवाओं में परिवार, माता-पिता और समाज से बढ़ती दूरी पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आज का युवा परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों से लगातार दूर होता जा रहा है। सामाजिक सरोकारों के प्रति उसकी रुचि में भी कमी आई है। यदि सामाजिक मुद्दों को शैक्षणिक पाठ्यक्रम का हिस्सा बना दिया जाए।

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

- पहले अपना लक्ष्य तय करें और रिस्क क्षमता जांच लें
- आपका लक्ष्य लंबी अवधि का है, तो इक्विटी म्यूचुअल फंड बेहतर
- रिटायरमेंट में ज्यादा वक्त नहीं बचा है तो डेट फंड्स में निवेश सही

हर म्यूचुअल फंड का रिस्क लेवल अलग होता है। इक्विटी फंड ज्यादा उतार-चढ़ाव वाले होते हैं, जबकि डेट या हाइब्रिड फंड ज्यादा स्टेबल रिटर्न देते हैं। आपकी रिस्क लेने की क्षमता आपकी उम्र, आमदनी और वित्तीय जिम्मेदारियों के हिसाब से भी तय होती है। साथ ही यह भी सोचें कि आपको पैसों की जरूरत कितने समय बाद पड़ेगी। अगर आपका लक्ष्य कुछ साल दूर है, तो इक्विटी में निवेश कर सकते हैं, लेकिन शॉर्ट टर्म के लिए डेट या लिक्विड फंड ज्यादा अच्छे माने जाते हैं।

निवेश करने जा रहे हैं तो पल्ले 'गांठ' बांध लें ये बातें, अच्छी होगी कमाई

म्यूचुअल फंड निवेश का एक पॉपुलर और स्मार्ट तरीका बन चुका है। यह एक ऐसा ऑप्शन है, जिसमें छोटे निवेशकों को भी प्रोफेशनल मैनेजमेंट, डायवर्सिफिकेशन और फ्लेक्सिबिलिटी का फायदा मिल पाता है, लेकिन अपने लिए सही म्यूचुअल फंड का सेलेक्शन करते समय केवल पिछले रिटर्न को देखना ही काफी नहीं होता। सही फंड चुनने के लिए कुछ अहम बातों का ध्यान रखना जरूरी है ताकि निवेश से बेहतर रिटर्न मिले और रिस्क भी कंट्रोल में रहे। सबसे पहले अपनी रिस्क क्षमता को देखते हुए लक्ष्य तय करें। इसके बाद ही निवेश के इस समर में उतरें। अगर इन जरूरी बातों पर ध्यान नहीं दिया तो सही फंड चुनने में चूक हो सकती है और आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है।

अपना फाइनेंशियल गोल तय करें

सबसे पहले ये समझना जरूरी है कि आप निवेश क्यों कर रहे हैं। घर खरीदने के लिए, बच्चों की पढ़ाई के लिए, रिटायरमेंट प्लान करने के लिए या फिर एसेट्स बनाने के लिए। अगर आपका निवेश का लक्ष्य साफ होगा, तो आपके लिए यह तय करना भी आसान हो जाएगा कि आपके लिए किस तरह का फंड बेहतर रहेगा। मिसाल के तौर पर अगर आपका लक्ष्य लंबी अवधि का है, तो इक्विटी म्यूचुअल फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं, जबकि रिटायरमेंट में ज्यादा वक्त नहीं बचा है तो डेट फंड्स में निवेश करना सही हो सकता है.

रिस्क लेने की क्षमता और इनवेस्टमेंट होराइजन

हर म्यूचुअल फंड का रिस्क लेवल अलग होता है। इक्विटी फंड ज्यादा उतार-चढ़ाव वाले होते हैं, जबकि डेट या हाइब्रिड फंड ज्यादा स्टेबल रिटर्न देते हैं। आपकी रिस्क लेने की क्षमता आपकी उम्र, आमदनी और वित्तीय जिम्मेदारियों के हिसाब से भी तय होती है। साथ ही यह भी सोचें कि आपको पैसों की जरूरत कितने समय बाद पड़ेगी। अगर आपका लक्ष्य कुछ साल दूर है, तो इक्विटी में निवेश कर सकते हैं, लेकिन शॉर्ट टर्म के लिए डेट या लिक्विड फंड ज्यादा अच्छे माने जाते हैं।

म्यूचुअल फंड की कैटेगरी को समझें

म्यूचुअल फंड्स की कई कैटेगरी हैं। मिसाल के तौर पर इक्विटी, डेट, हाइब्रिड, इंडेक्स, सेक्टोरल, ईएलएसएस वगैरह। हर फंड कैटेगरी की खूबियां अलग-अलग होती हैं। इसलिए यह जानना जरूरी है कि कौन-सा फंड किस तरह की जरूरत के लिए बना है। फंड एक्टिव है या पैसिव, यह जानना भी जरूरी है, क्योंकि इससे निवेश की रणनीति बदल सकती है।

पिछला ट्रैक रिकॉर्ड जरूर चेक करें

म्यूचुअल फंड्स के पिछले रिटर्न भविष्य की गारंटी नहीं देते, लेकिन यह जरूर बताते हैं कि किसी फंड ने बाजार के अलग-अलग साइकल या हालात में कैसा प्रदर्शन किया है। किसी फंड के तीन, पांच और सात साल के औसत रिटर्न की तुलना स्कीम के बेंचमार्क इंडेक्स और कैटेगरी एवरेज से करने पर उसके प्रदर्शन का काफी-कुछ अंदाजा लगाया जा सकता है।

फंड का पोर्टफोलियो देखें

कोई फंड किन कंपनियों में निवेश कर रहा है, यह जानना भी जरूरी है। इससे पता चलता है कि फंड मैनेजर की इनवेस्टमेंट फिलॉसफी क्या है और यह आपके जोखिम प्रोफाइल से मेल खाती है या नहीं। मिसाल के तौर पर लार्ज कैप स्टॉक्स में ज्यादा निवेश करने वाले फंड, मिड कैप या स्मॉल कैप में ज्यादा इनवेस्ट करने वाली स्कीम के मुकाबले कम रिस्क वाले हो सकते हैं।

फंड मैनेजर का पिछला ट्रैक रिकॉर्ड

म्यूचुअल फंड्स में फंड मैनेजर की भूमिका बहुत अहम होती है। उनका अनुभव और ट्रैक रिकॉर्ड बताता है कि वे बाजार की चाल को कितना समझते हैं और निवेशकों के पैसों को संभालने में कितने माहिर हैं। यह भी देखें कि जिस फंड में आप निवेश करना चाहते हैं, उसके फंड मैनेजर कितने अनुभवी हैं।

निवेश के खर्च पर भी गौर करें

किसी फंड में निवेश करने पर कितना खर्च आता है, यह उसके एक्सपेंस रेशियो से पता चलता है. अगर यह ज्यादा है तो आपकी कमाई पर असर पड़ सकता है। एक्टिव फंड्स में यह रेशियो कुछ अधिक हो सकता है, लेकिन पैसिव या इंडेक्स फंड्स में इसे कम ही रहना चाहिए. साथ ही डायरेक्ट प्लान का एक्सपेंस रेशियो भी उसी स्कीम के रेगुलर प्लान से कम होता है।

एग्जिट लोड व लॉक-इन पीरियड को समझें

कुछ फंड्स में तय समय से पहले पैसे निकालने पर एग्जिट लोड लगता है। ईएलएसएस जैसे फंड में 3 साल का लॉक-इन पीरियड होता है। कुछ फंड्स में यह 5 साल भी हो सकता है। इसलिए निवेश से पहले यह जानना जरूरी है कि आप जरूर पड़ने पर अपने पैसे कितनी जल्दी निकाल सकते हैं और उसका खर्च कितना होगा।

टैक्स के असर को भी जानें

इक्विटी और डेट फंड्स पर टैक्स की दरें अलग-अलग होती हैं। लॉन्ग टर्म और शॉर्ट टर्म के टैक्स रेट भी अलग होते हैं। निवेश का फैसला करते समय टैक्स इम्पैक्ट को ध्यान में रखें ताकि नेट रिटर्न का सही कैलकुलेशन हो सके।

फंड हाउस का पुराना प्रदर्शन भी देखें

जिस एसेट मैनेजमेंट कंपनी से फंड जुड़ा है, उसकी क्रेडिबिलिटी और पिछले इतिहास को जानना भी जरूरी है। एक मजबूत और भरोसेमंद एएमसी आपके पैसों को बेहतर तरीके से मैनेज कर सकता है। म्यूचुअल फंड में निवेश से अच्छा रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए आंख बंद करके किसी भी फंड में पैसा न लगाएं। अपनी जरूरत, रिस्क लेने की क्षमता और इनवेस्टमेंट होराइजन को समझें और ऊपर बताए गए हर प्वाइंट को ध्यान में रखकर फैसला करें। अगर जरूरत हो तो किसी फाइनेंशियल एक्सपर्ट की सलाह भी लें।

पीपीएफ में निवेश से भी जुटा सकते हैं 1.50 करोड़, ट्रिपल 5 का फॉर्मूला आएगा काम

केंद्र सरकार ने निवेशकों खासतौर से सैलरीड क्लास के बीच पॉपुलर स्मॉल सेविंग्स पर ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया है। जुलाई से सितंबर 2025 तक के लिए पीपीएफ पर 7.1 फीसदी सालाना ब्याज मिलता रहेगा। पीपीएफ की मैच्योरिटी 15 साल होती है, यानी यह लंबी अवधि के निवेश पर फोकस करने वाली स्कीम है। फाइनेंशियल एडवाइजर भी इसे लंबी अवधि के लिए सुरक्षित स्कीम मानते हैं। इस स्कीम के जरिए आप कितना फंड जुटा सकते हैं। क्या 1 करोड़ या 1.50 करोड़। इसका जवाब है आपके द्वारा होल्ड किए जाने वाली अवधि। पब्लिक प्रोविडेंट फंड एक ऐसी सरकारी स्कीम है, जिसे लंबी अवधि की निवेश के लिए डिजाइन किया गया है। अगर इस सरकारी स्कीम में लंबी अवधि तक या पूरे नौकरी पीरियड तक निवेश बनाए रहें तो रिटायरमेंट पर यह सरप्राइज दे सकता है। अब सवाल है कि मैच्योरिटी 15 साल की है तो इसे 25 साल या 30 साल तक होल्ड करना कैसे संभव है। ऐसा संभव है, इसे संभव बनाता है इस स्कीम में एक्सटेंशन से जुड़ा नियम।

पीपीएफ में निवेश के नियम

पीपीएफ की मैच्योरिटी वैसे तो 15 साल की है, लेकिन निवेशक चाहें तो इसे एक बार में 5 साल - 5 साल के लिए कितनी बार भी आगे बढ़ा सकते हैं। इस तरह से यह स्कीम पूरी नौकरी पीरियड में भी बनाए रखी जा सकती है। अगर आप एक्सटेंशन से जुड़े इस नियम का सही से फायदा उठाते हैं तो आपका भविष्य वित्तीय रूप से बहुत हद तक सुरक्षित हो सकता है। हमने यहां 28 साल से 58 साल तक यानी नौकरी के 30 साल निवेश पर कैलकुलेशन दिया है।

28 की उम्र में पीपीएफ अकाउंट शुरू करना और इसे 58 साल तक बनाए रखने का मतलब है कि आपने 15 साल की मैच्योरिटी के बाद 3 बार 5 साल के लिए यानी ट्रिपल 5 का फॉर्मूला अपनाकर इसमें निवेश जारी रखा।

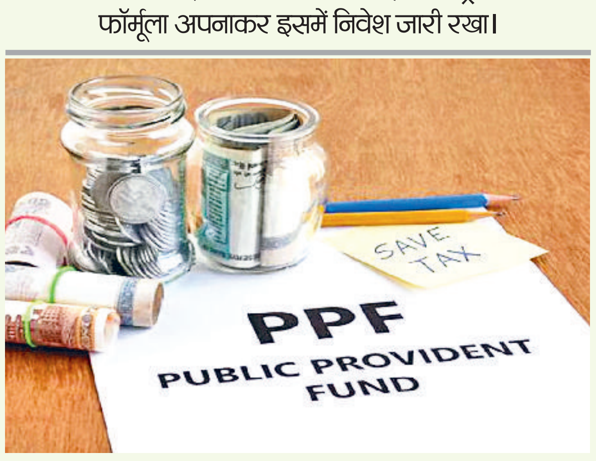

28 से 58 साल तक निवेश

28 की उम्र में पीपीएफ अकाउंट शुरू करना और इसे 58 साल तक बनाए रखने का मतलब है कि आपने 15 साल की मैच्योरिटी के बाद 3 बार 5 साल के लिए यानी ट्रिपल 5 का फॉर्मूला अपनाकर इसमें निवेश जारी रखा।

इसे ऐसे समझें

- एक फाइनेंशियल ईयर में जमा : 1.50 लाख रुपये
- ब्याज दर : 7.1 फीसदी सालाना
- 15 साल में कुल जमा : 22,50,000
- 15 साल बाद कुल फंड : 40,68,209
- 3 बार एक्सटेंड करने पर
- 30 साल में कुल जमा : 45,00,000
- 30 साल बाद कुल फंड : 1,54,50,911
- ब्याज का फायदा : 1,09,50,911 रुपये

पीपीएफ को एक्सटेंड करने पर क्या हैं फायदे?

यह बचत स्कीम एक्सटेंड करने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि आप अपने रिटायरमेंट तक इसके जरिए एक बड़ा कॉर्पस जो 1.50 करोड़ रुपये भी हो सकता है, तैयार कर सकते हैं। वहीं ईपीएफ अकाउंट से भी आपको रिटायरमेंट पर अच्छा खासा फंड मिलेगा। ऐसे में आपका बुढ़ापा पूरी तरह से टेंशन फ्री हो जाएगा।

क्लोजिंग बैलेंस पर 89,000 रुपये मंथली इनकम

यहां आपने 30 साल तक निवेश कर, रिटायरमेंट तक 1.50 करोड़ फंड जुटा लिया। अब इसी फंड से मंथली कमाई करना चाहते हैं तो इसे फिर एक्सटेंड कर फायदा उठा सकते हैं. अगर आप स्कीम को बिना कुछ निवेश किए 5 साल के लिए एक्सटेंड किया है तो आपको क्लोजिंग बैलेंस पर सालाना ब्याज मिलेगा। वहीं हर साल एक बार आप पूरी रकम का कितना फीसदी भी निकाल सकते हैं। यह 100 फीसदी तक हो सकता है। यहां 1.50 करोड़ रुपये के क्लोजिंग बैलेंस पर 7.1 फीसदी सालाना ब्याज मिलेगा। यह एक साल में 10,65,000 रुपये होगा. आप एक साल में एक बार में इस पूरी ब्याज की रकम को निकाल सकते हैं। इसे 12 महीनों में बांट दें तो करीब 88,750 रुपये महीना होगा. वहीं इस निकासी पर कोई टैक्स भी नहीं लगेगा।

क्या है पीपीएफ

- पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड) एक प्रकार की बचत योजना है जो भारत सरकार द्वारा संचालित की जाती है। यह योजना व्यक्तियों को अपने भविष्य के लिए बचत करने और कर लाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है।
- लंबी अवधि की बचतः पीपीएफ एक लंबी अवधि की बचत योजना है जिसमें निवेश की अवधि 15 वर्ष होती है।
- कर लाभः पीपीएफ में निवेश करने से आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत कर लाभ प्राप्त होता है।
- निश्चित ब्याज दरः पीपीएफ पर ब्याज दर सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है और यह दरें समय-समय पर बदलती रहती हैं।
- सुरक्षित निवेशः पीपीएफ एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकार का समर्थन होता है।

सोने में लौट रहा निवेशकों का भरोसा

गोल्ड ईटीएफ ने 5 वर्ष में दिया बड़ा मुनाफा

विकल्प | बिजनेस डेस्क

अगर आपने पिछले 5 सालों में हर महीने सिर्फ 10,000 रुपये गोल्ड ईटीएफ में लगाए होते, तो आज आपकी रकम करीब 10 लाख हो चुकी होती! एक रिपोर्ट के मुताबिक, येलो कमोडिटी यानी गोल्ड पर बेस्ड ईटीएफ ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। उदाहरण के तौर पर, एलआईसी एमएफ गोल्ड ईटीएफ में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी से कुल 6 लाख रुपये का निवेश करके 5 साल में 9.93 लाख रुपये तक का फंड तैयार किया है। इस दौरान इसका एक्सआईआरआर 20.93% रहा। इगोवहीं, यूटीआई गोल्ड ईटीएफ ने भी 9.92 लाख का रिटर्न दिया, जिसमें एक्सआईआरआर 20.87% रहा। कुल मिलाकर, गोल्ड ईटीएफ ने यह दिखा दिया है कि अगर आप अनुशासित तरीके से एसआईपी करते हैं, तो आपको बेहतर रिटर्न मिल सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक मई 2025 में गोल्ड ईटीएफ में कुल 291 करोड़ रुपये का निवेश आया है। इससे पता चलता है कि गोल्ड में निवेशकों को भरोसा लौट रहा है।

सोना निवेश का भरासेमंद विकल्प

मई 2025 में गोल्ड ईटीएफ में 291 करोड़ की नया निवेश हुआ। एक्सपर्ट का मानना है कि सोने की मजबूत कीमत और दुनिया भर की अनिश्चितताओं के कारण निवेशकों का सोने में फिर से भरोसा बढ़ रहा है। इससे पता चलता है कि सोना अब भी एक सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का ऑप्शन बना हुआ है। जानकारों के मुताबिक निवेशक फिर से सोने पर भरोसा कर रहे हैं क्योंकि सोना शेयर और बॉन्ड बाजार की अस्थिरता के बीच एक सुरक्षित जगह माना जाता है। मई महीने में सोने की कीमतें ज्यादा बदल नहीं हुईं, जिससे निवेशकों के लिए यह सही समय था कि वे अपने पैसे सुरक्षित जगह लगाएं या अपने निवेश का संतुलन ठीक करें। इसलिए अब ज्यादा लोग सोने में निवेश कर रहे हैं।

क्या है गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ (एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो सोने की कीमतों को ट्रैक करता है। यह निवेशकों को सोने में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है बिना भौतिक सोना खरीदने की आवश्यकता के।

गोल्ड ईटीएफ के लाभ

- **सोने में निवेश :** गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को सोने में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है बिना भौतिक सोना खरीदने की आवश्यकता के।
- **विविधीकरण :** गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद कर सकता है।
- **लिक्विडिटी :** गोल्ड ईटीएफ में उच्च लिक्विडिटी होती है, जिससे निवेशक अपने निवेश को आसानी से बेच सकते हैं।
- **कम लागत :** गोल्ड ईटीएफ में निवेश करने की लागत कम होती है।

एसआईपी करने वालों के लिए खुशखबरी

- 5 साल में गोल्ड ईटीएफ ने 10,000 मासिक एसआईपी को 10 लाख में बदला
- एलआईसी, यूटीएल, और इनवेस्को जैसे फंड्स ने 20% से ज्यादा रिटर्न दिया
- मई में गोल्ड ईटीएफ में 291 करोड़ का निवेश आया, दे रहा बढ़िया संकेत

गोल्ड ईटीएफ- 5 साल का परफॉर्मेंस

गोल्ड ईटीएफ	10,000 मंथली एसआईपी का वर्तमान वैल्यू जो 5 साल पहले शुरू किया था	एक्सआईआरआर (%)
एलआईसी	993,917.25	20.93
यूटीआई गोल्ड	992,677.42	20.87
इन्वेस्को इंडिया	991,639.77	20.83
एक्सिस	990,730.89	20.79
आईसीआईसीआई प्रू	990,214.31	20.77
आदित्य बिड़ला एसएल	988,839.31	20.71
एचडीएफसी	988,609.05	20.7
कोटक	988,529.52	20.7
एसबीआई	986,021.61	20.59
क्वांटम गोल्ड फंड	984,917.72	20.54
निप्पॉन इंडिया ईटीएफ गोल्ड बीईएस	983,924.09	20.5

गोल्ड ईटीएफ की विशेषताएं

- सोने की कीमतों को ट्रैक करना : गोल्ड ईटीएफ सोने की कीमतों को ट्रैक करता है, जिससे निवेशकों को सोने के मूल्य में परिवर्तन के अनुसार लाभ या हानि होती है।
- एक्सचेंज पर कारोबार : गोल्ड ईटीएफ शेयर बाजार में सूचीबद्ध होता है और इसका कारोबार शेयरों की तरह किया जा सकता है।
- लिक्विडिटी : गोल्ड ईटीएफ में उच्च लिक्विडिटी होती है, जिससे निवेशक अपने निवेश को आसानी से बेच सकते हैं।
- कम लागत : गोल्ड ईटीएफ में निवेश करने की लागत कम होती है क्योंकि इसमें भौतिक सोना खरीदने और रखने की आवश्यकता नहीं होती है।

स्वास्थ्य बीमा में ईएमआई के लाभ : कवरेज को और किफायती बनाएं

ईएमआई भुगतान विकल्प के साथ स्वास्थ्य बीमा खरीदना करना ज़्यादा सुविधाजनक ■ पॉलिसीधारक छोटी, ज़्यादा सुलभ किश्तों में प्रीमियम का भुगतान कर पाने में होते हैं सक्षम ■ मिलती है मासिक, त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक भुगतान माध्यम चुनने की सुविधा

जानकारी
भास्कर नेरुरकर

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में, स्वास्थ्य समस्याएं और बढ़ते मेडिकल खर्चे व्यक्तियों और परिवारों दोनों के लिए एक आम समस्या बन गए हैं। हेल्थकेयर की बढ़ती लागत के चलते, बहुत से लोगों के लिए कॉम्प्रिहेंसिव स्वास्थ्य बीमा कवरेज खरीदना पहले से ज़्यादा मुश्किल हो गया है। सुलभता और किफायत को बढ़ाने के लिए, इंश्योरेंस रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट ऑथोरिटी ऑफ इंडिया (आईआरडीएआई) ने 2019 में यह नियम बनाया कि बीमा प्रीमियम का भुगतान एकमुश्त करने के बजाय, बीमा कंपनियां पॉलिसीधारकों को ईएमआई (समान मासिक किश्तों) में प्रीमियम चुकाने का विकल्प दें। इससे लोगों के लिए अपने खर्चों को बजट में लाना आसान हो जाएगा और यह सुनिश्चित होगा है कि उनके पास अप्रत्याशित मेडिकल खर्चों से सुरक्षा के लिए निरंतर स्वास्थ्य कवरेज हो। ईएमआई भुगतान विकल्प के साथ स्वास्थ्य बीमा खरीदना करना ज़्यादा सुविधाजनक हो जाता है, जिससे पॉलिसीधारक छोटी, ज़्यादा सुलभ किश्तों में प्रीमियम का भुगतान कर पाते हैं।

ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा आपको एक बार में पूरी राशि का भुगतान करने के बजाय, मासिक, त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक भुगतान माध्यम चुनने की सुविधा देता है, जिससे अपना बजट बनाना आपके लिए आसान हो जाता है। उदाहरण के लिए, अगर आपका वार्षिक प्रीमियम 36,000 रुपये है, तो फाइनेंशियल बाधाओं की वजह से पूरी राशि का एकमुश्त भुगतान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। ईएमआई भुगतान के ज़रिए, आप 3,000 रुपये की 12 किश्तों में भुगतान करने का विकल्प चुन सकते हैं या पूरी राशि को त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक किश्तों में बांटकर भुगतान कर सकते हैं, जिससे आपको लगातार कवरेज भी मिलती है और आपकी फाइनेंशियल स्थिरता भी बनी रहती है। यह तरीका पॉलिसीधारकों को एक बार में बड़े खर्चों से बचने में मदद करता है, जिससे स्वास्थ्य बीमा प्राप्त करना और मैनेज करना आसान हो जाता है। ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा लेने से कई लाभ मिलते हैं, जो हेल्थकेयर कवरेज प्राप्त करना आसान और सुविधाजनक बनाते हैं. यहां कुछ प्रमुख लाभ दिए गए हैं।

उच्च कवरेज का एक्सेस

एक अच्छा स्वास्थ्य बीमा प्लान होना बहुत जरूरी है, लेकिन कई बार इसकी लागत आपके लिए चिंता का विषय हो सकती है। ईएमआई का विकल्प चुनकर, आप उच्च कवरेज वाले प्लान खरीद सकते हैं। जो कि विशेष रूप से हृदय रोग, कैंसर, किडनी फेलियर या न्यूरोलॉजिकल विकार जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने में मददगार होते हैं। इन बीमारियों का इलाज महंगा हो सकता है, जिसमें लंबे समय तक मेडिकल केयर, सर्जरी और महंगी दवाओं की आवश्यकता होती है। ईएमआई प्लान के साथ, आप उन गंभीर बीमारियों को कवर करने वाली बीमा पॉलिसी चुन सकते हैं, जिनके लिए एकमुश्त भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे कठिन समय में आपके और आपके परिवार के लिए फाइनेंशियल सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

सीनियर सिटीज़न और रिटायर हो चुके लोगों के लिए उपयुक्त

जैसे-जैसे व्यक्ति की आयु बढ़ती है, स्वास्थ्य बीमा और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, लेकिन आयु से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों के कारण कवरेज की लागत अधिक हो सकती है. सीनियर सिटीजन और रिटायर हुए लोगों के लिए, बीमा के लिए बड़ी राशि का एकमुश्त भुगतान चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासतौर पर तब जब उनकी आय एक निश्चित राशि तक ही सीमित हो। ऐसी स्थिति में ईएमआई प्लान सहायक बन जाते हैं। सुविधाजनक भुगतान विकल्पों के साथ, वे सही पॉलिसी प्राप्त कर सकते हैं जो फाइनेंशियल स्थिरता बनाए रखते हुए उनके स्वास्थ्य की सुरक्षा करती है।

ज़्यादा किफायती

बीमा के लिए एक बड़ी राशि का भुगतान करना कभी-कभी आपकी जेब पर भारी पड़ सकता है। ऐसे में ईएमआई प्लान मददगार साबित होते हैं -वे खर्च को छोटे, आसान भुगतानों में बांटते हैं, जिससे हर किसी के लिए बीमा लेना ज़्यादा किफायती हो जाता है। वार्षिक प्रीमियम का एक बार में भुगतान करके परेशान होने की बजाय, आप आसान किश्तों में भुगतान कर सकते हैं, जिससे आपका आर्थिक दबाव कम हो सकता है। उदाहरण के लिए, कॉम्प्रिहेंसिव पॉलिसी के लिए एक बार में 50,000 रुपये का भुगतान करने के बजाय, आप एक वर्ष के लिए प्रति माह लगभग 4,167 रुपये का भुगतान करने का विकल्प चुन सकते हैं।

परेशानियों को कम करते हैं ऑटोमैटिक भुगतान

कभी-कभी बीमा प्रीमियम का भुगतान करना मुश्किल हो सकता है, खासतौर पर जब आप जीवन में व्यस्त हो जाते हैं। इसलिए कई बीमा कंपनियां ईएमआई भुगतान के लिए ऑटो-डेबिट विकल्प प्रदान करती हैं, जिससे प्रीमियम का भुगतान करना आसान हो जाता है और यह सुनिश्चित होता है कि आपकी पॉलिसी जारी रहे. ऑटो-डेबिट सुविधा के साथ, आपकी चुनी गई आवृति, जैसे मासिक, तिमाही, अर्ध-वार्षिक या वार्षिक के आधार पर, आपका बीमा प्रीमियम ऑटोमैटिक रूप से आपके बैंक अकाउंट से काटा जाता है। यह सुविधा आपको भुगतान से चूकने से बचाती है और भुगतान में देरी की वजह से पॉलिसी समाप्त होने के जोखिम को खत्म करती है। इसके अलावा, यह आपको हर देय तिथि को याद रखने से भी बचाती है। इस विकल्प के साथ, आप बिना किसी फाइनेंशियल दबाव के लगातार कवरेज बनाए रख सकते हैं और हर समय सुरक्षित रह सकते हैं।

टैक्स लाभ : स्वास्थ्य बीमा न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है, बल्कि टैक्स लाभ भी प्रदान करता है, जो आपको पैसे बचाने में मदद कर सकता है। इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80डी के तहत, आप स्वास्थ्य बीमा के प्रीमियम पर खर्च किए गए पैसे पर कटौती का क्लेम कर सकते हैं। यह आपकी टैक्स योग्य आय को कम करता है, जिससे आपका देय टैक्स भी कम हो जाता है। स्वयं, पति/पत्नी, बच्चों और आश्रित माता-पिता के लिए चुकाए गए प्रीमियम पर यह कटौती लागू होती है। अगर आप प्रीमियम का भुगतान ईएमआई पर करना चुनते हैं, तो आपको टैक्स लाभ भी मिलेंगे और छोटे भुगतानों की सुविधा भी। टैक्स फाइल करते समय कटौती का क्लेम करने के लिए, सभी भुगतानों की रसीदें और पॉलिसी डॉक्यूमेंट को प्रमाण के रूप में ज़रूर रखें।

स्मार्ट और सुविधाजनक विकल्प : ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा उन व्यक्तियों और परिवारों के लिए एक स्मार्ट और सुविधाजनक विकल्प है, जो एक बार में बड़ी राशि का भुगतान किए बिना कॉम्प्रिहेंसिव हेल्थकेयर कवरेज चाहते हैं। शुरुआत करने के लिए, अपनी हेल्थकेयर की आवश्यकताओं का आकलन करें और विभिन्न बीमा प्लान्स के बारे में जानें। नियम और शर्तों को समझें और अपने बजट के अनुसार भुगतान की आवृति चुनें। पता लगाएं कि क्या कोई अतिरिक्त शुल्क लग रहा है, पॉलिसी की कवरेज में क्या शामिल है और क्लेम कैसे करते हैं, ताकि बाद में कोई समस्या न हो। सही स्वास्थ्य बीमा प्लान और किफायती ईएमआई आपको लंबे समय के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा, फाइनेंशियल सुरक्षा और मन की शांति प्रदान करते हैं। याद रखें, आज सही विकल्प चुनने से आपको भविष्य में मेडिकल एमरजेंसी के दौरान फाइनेंशियल तनाव से बचने में मदद मिल सकती है।

(लेखक बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस के हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन टीम के हेड हैं।)

खबर संक्षेप

शिव संगम अकादमी ने समर कप 8 विकेट से जीता

रोहतक। वीटीआई क्रिकेट मैदान में आयोजित तीसरे समर कप-2025 का फाइनल मुकाबला शुक्रवार को शिव संगम अकादमी और बीसीए के बीच खेला गया, जिसमें शिव संगम ने बीसीए को 8 विकेट से हराकर खिताब अपने नाम किया। बीसीए ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 37.1 ओवर में 125 रन बनाए। शिव संगम की ओर से गेंदबाजी में प्रियान, कल्पेश दलाल, ओजस और आयुष ने कसी हुई गेंदबाजी करते हुए महत्वपूर्ण विकेट चटकाए। जवाब में लक्ष्य का पीछा करने उतरी शिव संगम अकादमी ने 30.4 ओवर में ही 130 रन बनाकर मुकाबला अपने नाम कर लिया। बल्लेबाजी में रविश दलाल ने शानदार प्रदर्शन किया, जबकि बीसीए की ओर से नमन शर्मा ने संघर्षपूर्ण पारी खेली।

वित्तीय समावेशन अभियान 30 सितंबर तक होगा: डीसी

रोहतक। उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि केंद्रीय सरकार के वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा प्रभाग द्वारा गत 16 जून को जारी निर्देश की अनुपालन हेतु वित्तीय समावेशन अभियान एक जुलाई से आगामी 30 सितंबर तक के लिए बैंकों एवं पंचायत विभाग द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर आयोजित किए जाने वाले शिविरों के लिए कार्यक्रम तय किया जा चुका है। डीसी ने बताया कि बैठक में तय किया गए शेड्यूल के अनुसार 1 जुलाई से शुरू किए गए इस अभियान के तहत जिला की प्रत्येक पंचायत में कैंप का आयोजन कर सभी पात्र ग्रामीणों के वित्तीय समावेशन के अंतर्गत चलाई जा रही सभी योजनाओं में भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

20 ने किया रक्तदान 115 का स्वास्थ्य जांचा

रोहतक। शुगर मिल रोहतक मिल की प्रबन्ध निदेशक श्वेता सुहाग ने बताया कि वर्ष 2025 अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस बारे सरकार द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशानुसार सभी विभागों द्वारा विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। सुहाग ने बताया कि इस शिविर में सिविल अस्पताल की टीम द्वारा मिल कर्मचारियों के स्वास्थ्य एवं रक्त की जांच की गई।

नगर निगम की सुस्त कार्यशैली पर उठ रहे सवाल

हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में अधूरी सड़क से लोगों को हो रही भारी परेशानी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

वार्ड नंबर 20 की पुरानी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में सड़क निर्माण अधूरा छोड़ने के चलते कॉलोनीवासियों और दुकानदारों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मंगलवार को स्थानीय दुकानदारों और क्षेत्रवासियों ने एकत्र होकर नगर निगम प्रशासन के खिलाफ नाराजगी जताई और काम में हो रही लापरवाही पर सवाल उठाए। समाजसेवी जसबीर ने बताया कि कॉलोनी में भगवती चौक से लेकर शिवाजी कॉलोनी मोड़ तक की सड़क को बनवाने का कार्य नगर निगम द्वारा लगभग दो महीने पहले शुरू किया गया था। लेकिन काम की गति बेहद धीमी है। निर्माण कार्य दो दिन चलता है और फिर चार दिन बंद रहता है। इस लापरवाही के कारण न तो सड़क बन पाई है और न ही लोगों की परेशानियां खत्म हुई हैं। अधूरी सड़क के चलते ग्राहकों की आवाजाही पर बुरा असर पड़ा है।

स्कूल बसों और बच्चों को भी दिक्कत

समाजसेवी जसबीर ने बताया कि इस सड़क से कई स्कूलों की बसें गुजरती हैं, लेकिन सड़क की बदहाली के चलते अब उन्हें वैकल्पिक रास्तों से होकर जाना पड़ रहा है। बच्चों और बुजुर्गों के लिए टूटी सड़क से निकलना खतरे से खाली नहीं है। कई लोग गड्ढों में गिरकर चोटिल भी हो चुके हैं।

बारिश में हालात और खराब

स्थानीय निवासी विमला देवी ने बताया कि जैसे ही बारिश होती है, हालात और खराब हो जाते हैं। सड़क पर कीचड़ फैल जाती है और लोगों को निकलना मुश्किल हो जाता है। गड्ढों में पानी भर जाता है, जिससे कई बार वाहन फंस जाते हैं और पैदल चलना भी नामुमकिन हो जाता है।

नालियां टूटी हुई हैं, सड़क की खुदाई के कारण धूल और गंदगी हर समय उड़ी रहती है। दुकानों तक पहुंचना मुश्किल हो गया है, जिस कारण बिक्री में भारी गिरावट आई है। दुकानदारों ने बताया कि कई बार उन्होंने नगर निगम अधिकारियों को शिकायत दी, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई।

दुकानदार रमेश कुमार ने बताया कि गर्मी के मौसम में सड़क पर धूल उड़ती रहती है, जिससे सांस संबंधी बीमारियां बढ़ रही हैं। बुजुर्गों और छोटे बच्चों की तबीयत पर इसका सीधा असर हो रहा है। लोगों का कहना है कि धूल मिट्टी के कारण घरों में भी गंदगी फैल रही है।

विरोध जताने पहुंचे लोगों ने नगर निगम आयुक्त से अपील की कि वे व्यक्तिगत रूप से इस मामले में हस्तक्षेप करें और संबंधित ठेकेदार को निर्देश दें कि कार्य को तेजी से पूरा किया जाए।कॉलोनीवासियों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द सड़क निर्माण कार्य पूरा नहीं हुआ, तो वे नगर निगम कार्यालय के बाहर धरना प्रदर्शन करेंगे।

द आर्यन ग्लोबल विद्यालय में अंग्रेजी हस्तलेखन प्रतियोगिता में भाग लेते बच्चे।

अंग्रेजी हस्तलेखन प्रतियोगिता का आयोजन

रोहतक। शनिवार को द आर्यन ग्लोबल विद्यालय के प्रांगण में कक्षा छठी से आठवीं तक अंग्रेजी हस्तलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्रों की अंग्रेजी हस्तलिपि कौशल में सुधार करना, उन्हें प्रदर्शित करना तथा उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा देना है। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों द्वारा एक छोटा अनुच्छेद अंग्रेजी में लिखा गया। प्रधानाचार्य आरके खन्ना द्वारा विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत व प्रमाण पत्र दिए गए तथा उन्हें भविष्य में इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

महम। महम रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र प्रदान करते महम चीनी मिल के प्रबंध निदेशक मुकुंद व उनकी माता विजय तंवर। *फोटो : हरिभूमि*

रक्तदान कर मनाया अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस

महम। शनिवार को दी महम सहकारी चीनी मिल लिमिटेड महम में अंतर राष्ट्रीय सहकारिता दिवस के उपलक्ष्य पर रक्तदान शिविर लगाया गया। इस रक्तदान शिविर में करीब 50 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। मिल के प्रबंध निदेशक मुकुंद की माता विजय तंवर समारोह की मुख्य अतिथि रही। विजय तंवर ने रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि रक्तदान करना बहुत ही पुण्य का काम है। रक्तदाताओं द्वारा दान किए गए रक्त से मरीज की जान बचाई जा सकती है।

मॉडल स्कूल के छात्रों ने तंबाकू मुक्त वातावरण के लिए किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

भारत सरकार के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग द्वारा जारी तंबाकू मुक्त शैक्षणिक संस्थान के दिशानिर्देशों के तहत, मॉडल स्कूल अंबेड़कर चौक ने जुलाई माह के पहले सप्ताह में जागरूकता और प्रवर्तन गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित किया। कक्षा आठवीं द्वारा छात्रों की एक रैली का आयोजन किया गया था, जिसमें तंबाकू के हानिकारक प्रभावों और तंबाकू मुक्त वातावरण बनाए रखने के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक किया गया। विद्यार्थियों ने प्रभावशाली संदेशों जैसे तंबाकू को ना कहें, स्मार्ट बनें, शुरू न करें, और 100 गज तंबाकू मुक्त क्षेत्र वाली तख्तियों से लोगों में जागरूकता फैलाई। रैली में प्रधानाचार्या डॉ. अरुणा तनेजा और शिक्षकों का समर्थन और सहयोग रहा, जिससे संदेश का प्रभाव और बढ़ गया। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों और आसपास के लोगों को तंबाकू - सेवन के दुष्प्रभावों के प्रति शिक्षित करना था। मॉडल एजुकेशन सोसाइटी के अध्यक्ष एवं उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह, उपाध्यक्ष रामअवतार गुप्ता, सचिव राजेश सहगल ने विद्यार्थियों की इस पहल की सराहना की। इस कार्यक्रम के आयोजन में कुलदीप वर्मा, निधि सचदेवा, नीति सहरावत आदि मौजूद रहे।

वैश्य एजुकेशन सोसायटी के होने वाले त्रैवार्षिक चुनावों के लिए अब तक 340 नांमाकंन पत्र हुए दाखिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

वैश्य एजुकेशन सोसायटी की 105 कालिजियम के लिए होने वाले त्रैवार्षिक चुनावों के लिए नामाकंन का अन्तिम दिन था। कुल 340 नामाकंन पत्र दाखिल किए गए। नामाकंन दाखिल करने वालों में प्रमुख रूप से बहादुरगढ़ से गजानन्द गर्ग, भिवानी से आनन्द बासिया, दीपक प्रकाश बंसल, दिल्ली से मुन्नी लाल गर्ग शामिल रहे।

निर्वाचन अधिकारी राजेन्द्र बंसल ने बताया कि कुल 16918 आजीवन सदस्य इस चुनाव में मतदाता है जोकि बैलेट पेपर के माध्यम से अपने मत का प्रयोग करेंगे। उन्होंने बताया कि 6 व 7 जुलाई को नामाकंन फार्मो की जांच पड़ताल की जाएगी तथा 8 जुलाई को नामाकंन सूची का प्रकाशन किया जाएगा। 9 व 10 जुलाई को नामाकंन वापिसी किये जा सकेगे तथा 11 जुलाई को प्रत्याशी सूची का प्रकाशन किया जाएगा। 12 जुलाई को चुनाव चिन्ह आवंटित किये जायेगे तथा 20 जुलाई को मतदान होगा। उन्होंने बताया कि इस चुनाव में हरियाणा, दिल्ली, चण्डीगढ़, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के आजीवन सदस्य आकर अपना मतदान करेंगे।

इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी बताया कि जिला रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटीज द्वारा नियुक्त को- रिटर्निंग अधिकारी अजित प्रसाद जैन पूरे दिन चुनाव कार्यालय में उपस्थित रहे और नामाकंन में पारदर्शिता एवं इसके लिए बनाई गई व्यवस्था की सराहना की।

निष्पक्ष चुनाव की अपील

निर्वाचन अधिकारी राजेन्द्र बंसल ने कहा कि निष्पक्ष चुनाव करवाया जाएगा उन्होंने सभी से आदर्श चुनाव आचार संहिता की पालना करने के लिए अपील की। उन्होंने सोसायटी कार्यालय अधीक्षक हरिनारायण दूबे, चुनाव ड्यूटी पर आए हुए संस्थान के स्टाफ सदस्यों सुशील शर्मा, पवन गर्ग, डा. अन्नु मलिक, विजेता शर्मा, हर्षिता, रोहित गुप्ता, प्रमोद गोयल, राहुल, मनजीत, सत्यनारायण दूबे, कमल सैनी, साहिल, अमित अग्रवाल आदि रहे।

पुलिस अधिकारी के आश्वासन के बाद किया अंतिम संस्कार, एक आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सांपला

गांव इस्माईला के लोगों ने शनिवार को गोपी हत्याकांड में कार्रवाई में देरी को लेकर पुलिस थाने में रोष प्रकट किया। उन्होंने कहा कि जब तक आरोपी नहीं पकड़े जाते तब तक अंतिम संस्कार नहीं किया जाएगा। डीएसपी रजनिश द्वारा आश्वासन देने के बाद ही ग्रामीण अंतिम संस्कार करने पर सहमत हुए। हालांकि पुलिस ने एक आरोपी को भी दबोच लिया और दूसरे आरोपियों की तलाश की जा रही है।

जानकारी के अनुसार, पैसों के लेन-देन को लेकर उसके दोस्तों ने गोपी की 2 जुलाई की रात को हत्या कर दी थी। शव को चुलियाणा मोड़ के पास खाली पड़ी जमीन में दबा दिया था। शुक्रवार को शव का पता लगा। पुलिस ने शनिवार को शव का पोस्टमार्टम कराने के लिए परिजनों को बुलाया। परिवार के लोगों ने सभी आरोपियों की गिरफ्तारी न होने तक अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया और पुलिस के खिलाफ थाने में रोष प्रकट किया। डीएसपी रजनिश कुमार के आश्वासन पर लोग पोस्टमार्टम कराने और अंतिम संस्कार करने के लिए सहमत हुए। मृतक की माता ममता ने बताया कि 2 जुलाई को उनके पड़ोस में जन्म दिन का कार्य क्रम था। देर शाम तक चले कार्यक्रम में उसका बेटा गोपी भी शामिल था। रात को निरज, संदीप, विकास, बुद्ध, सतीश उसके बेटे को गाड़ी में बैठा ले गए और उसकी हत्या कर दी।

रोहतक। पुलिस थाने में रोष जताने पहुंचे परिजन। *फोटो : हरिभूमि*

मृतक का फाइल फोटो।

पंचायत चुनाव की रंजिश में काहनी के सरपंच पर हमला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

गांव काहनी साढ़े सात के सरपंच प्रदीप ने आरोप लगाया है कि पंचायत चुनाव में हार की रंजिश रखते हुए गांव के ही रमेश ने उन पर हमला कर दिया। बताया कि हमला उस समय किया गया जब वह गांव में नाले के पास सीवर लाइन का कार्य करवा रहे थे। वह लोहे का जाल लगवा रहे थे तभी रमेश वहां आकर वीडियो बनाने लगा और कहने लगा कि यह काम नहीं होने दिया जाएगा। इसी दौरान रमेश ने मीना, रामचंद्र और बलजीत के साथ मिलकर लाठी-डंडों से हमला कर दिया, जिससे उन्हें गंभीर चोटें आईं। पीड़ित ने पुलिस को शिकायत दी है, लेकिन अभी तक मुकदमा दर्ज नहीं किया गया है। सरपंच ने बताया कि उन्होंने तत्काल पुलिस की डायल 112 पर कॉल की, लेकिन पुलिस के पहुंचते ही सभी आरोपी मौके से फरार हो गए। छोटे भाई अजीत को भी काफी चोटें आई है, उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। प्रदीप का कहना है कि इससे पहले भी उन्होंने एसपी रोहतक को शिकायत दी थी, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने यह भी बताया कि वक्फ बोर्ड की जमीन उनके ताऊ के लड़के के नाम पट्टे पर है। यह जमीन पहले रमेश और मनोज के कब्जे में थी और इस मामले को लेकर सिविल कोर्ट में मुकदमा भी चल रहा है। प्रदीप ने आरोप लगाया कि रमेश और मनोज बार-बार केस वापस लेने की धमकी देते हैं और गांव में कोई भी विकास कार्य होने पर झगड़ा करने लगते हैं।

भाजपा नेताओं के प्रयासों से हलके में हो रहा विकास

महम। भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के प्रयासों से महम हलके में तेजी से विकास कार्य चल रहे हैं। भाजपा नेता अजीत अहलावत ने बताया कि राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा और महंत सतीश दास समेत वे खुद गांव गांव जाकर लोगों की समस्याएं सुन रहे हैं। महम हलके में विकास कार्यों की बाढ आई हुई है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने महम हलके में जर्जर हाल हो चुकी 28 सड़कों को नए सिरे से बनाने का निर्णय लिया है। इनमें कुछ सड़कों का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है, जबकि कुछ सड़कें अभी बनाई जानी हैं। प्रदेश सरकार का सपना महम हलके को विकसित हलका बनाना है। यही वजह है कि प्रदेश में सरकार नॉन स्टॉप काम कर रही है। सबका साथ सबका विकास नीति के तहत सरकार काम कर रही है।

महम। अजीत अहलावत।

गुलशन शर्मा ने फिटनेस कोच का किया सम्मान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

किसी भी खिलाड़ी को बुलंदियों तक पहुंचाने में और उस खिलाड़ी के शरीर को वज्र जैसा बनाने फिटनेस कोच का बहुत महत्व होता है। वर्ल्ड मास्टर गेम 2025 ताईपे ताईवान में दो सिल्वर मेडल जीतने वाले गुलशन शर्मा ने राजीव गांधी स्टेडियम रोहतक में अपने फिटनेस कोच आजाद सिंह राठी को अंग वस्त्र पहना सम्मानित किया और आशीर्वाद लिया। आजाद सिंह राठी ने हमेशा गुलशन शर्मा की फिटनेस को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई। गुलशन शर्मा की योग के माध्यम से फिटनेस रखने रामचन्द्र अहलावत का भी हार्दिक आभार प्रकट किया। दोनों फिटनेस कोच ने गुलशन शर्मा को मेडल जीतने सिरोपा भेंट कर बधाई दी एवं उज्जवल भविष्य की।आजाद सिंह राठी व राम चंद्र अहलावत दोनों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों मेडल जीते। इस मोके पर नरेश, सुमित राठी व अन्य कोच मोजूद रहे।

बहु जमालपुर में 225 छायादार, फलदार, औषधीय पौधे लगाए

पर्यावरण संरक्षण के लिए संजीवनी है पौधे लगाना

- मां और वृक्ष का सनातन संस्कृति में पूजनीय स्थान, मां के नाम किया पौधरोपण: महंत राजेंद्र दास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

स्वामी नितानंद फाउंडेशन के तत्वाधान में शनिवार को बहु जमालपुर गांव में 225 छायादार, फलदार व औषधीय पौधे लगाए। जटेला धाम के महंत राजेंद्र दास ने बताया कि पेड़, पौधे और वनस्पति पृथ्वी का श्रृंगार है जब पृथ्वी वनस्पति और पेड़ पौधों से लदी हुई थी तो किसी प्रकार की बीमारी और महामारी का कोई प्रकोप नहीं होता था। ऋषि मुनियों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधरोपण अभियान सनातन शिक्षा का आवश्यक अंग बनाया था। इसी कारण श्रावण के महीने में पौधारोपण करके वे पृथ्वी माता के कर्ज से समाज को उऋण करने की सीख देते थे। उसी सनातन परंपरा को आगे बढ़ाते हुए नितानंद मिशन फाउंडेशन ने पौधारोपण अभियान चला करके धरती माता को पर्यावरण संरक्षण की मुहिम छेड़ी है, जिसकी शुरुआत जटेला धाम में 12 जून को सीएम नायब सिंह सैनी ने पर्यावरण महाकुंभ में की।

महंत राजेंद्र दास ने कहा कि वृक्षारोपण और वनस्पति संरक्षण के दृष्टांत से हमारे वेद, महाभारत रामायण तथा उपनिषद भरे पड़े हैं। स्वामी नितानंद महाराज ने सत्य सिद्धांत प्रकाश में वृक्षों के औषधीय और पर्यावरण गुणो की महिमा का बड़ा वर्णन किया है। इसी कारण नितानंद महाराज के पर्यावरण संरक्षण अभियान को आगे बढ़ाने के लिए पूरे हरियाणा में पौधारोपण अभियान एक आंदोलन की तरह चलाया जा रहा है। एक पेड़ मां के नाम रोपित करके मां के ऋण से उऋण होने का एक अभियान हरियाणा की पावन धरा से शुरू हुआ है जो एक पर्यावरण संरक्षण का सकारात्मक मिशन बन जाएगा। उन्होंने युधिष्ठिर यक्ष संवाद की चर्चा करते हुए कहा कि इस संवाद में युधिष्ठिर ने मां की उपमा पृथ्वी से की है। महाभारत ग्रंथ में युधिष्ठिर ने माता को पृथ्वी के समान सहनशील और धैर्यवान बताया है। युधिष्ठर का कहना था कि जिस प्रकार पृथ्वी सभी प्राणियों का भरण पोषण करती है, उसी प्रकार माता भी अपने बच्चों के सुख-दुख और कष्टों को सहन करती है। अतः एक पेड मां के नाम पर्यावरण संरक्षण अभियान अपने आप में एक अनूठी परंपरा है।

पौधरोपण अभियान के तहत ये रहे मौजूद

जिला पार्षद जयदेव डागर, जितेंद्र राणा, नेहा राणा, नवीन पांचाल, संजय सरपंच बहु जमालपुर, राजमोहिनी, पूनम राजकुमार भाली, मास्टर आशीष, सुनील बल्हारा, अनूप भाली, सुमन जिला पार्षद, खुशीराम हुड्डा ब्लॉक चेयरमैन, रवींद्र सरपंच माड़ोदी, प्रो कुलताज, अनूप सरपंच माड़ोदी, बिजेंद्र सरपंच माड़ोदी, दलेल सरपंच सुंडाना, नरेश सरपंच जेठपुर, संदीप राठी सरपंच लाखन माजरा, प्रेम नंबरदार, शमशेर बल्हारा, नवीन बल्हारा इनेलो आदि मौजूद रहे।

गतिविधियां आयोजित कर आमजन को पहुंचाए लाभ : महेश जोशी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

हरियाणा राज्य रेडक्रॉस समिति के महासचिव महेश जोशी शनिवार को रोहतक पहुंचे। जोशी ने उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह के साथ कैंप कार्यालय में बैठक की और रेडक्रॉस समिति के माध्यम से जो गतिविधियां गत कुछ माह से शुरू की गई हैं, उनके बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि यह गतिविधियां पूरे जिले में चलाई जानी चाहिए, जिससे कि अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके। उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह ने कहा कि रेडक्रॉस द्वारा जिला प्रशासन के माध्यम से जिला के सभी उपमंडल में निशुल्क दिव्यांग जांच शिविर, वरिष्ठ नागरिकों के लिए जांच शिविर, आंखों की जांच शिविर ओर गांव स्तर पर फर्स्ट एड होम नर्सिंग की ट्रेनिंग देने का कार्य शुरू कर रहा है। जिससे गांव स्तर पर ही उन्हें इसका लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि रेडक्रॉस के वालंटियर प्रत्येक गांव में नियुक्त किए जाएंगे, जिससे कि गांव के स्तर पर जिन जरूरतमंद लोगों को दिव्यांगों व बुजुर्गों को किसी भी प्रकार के उपकरण की आवश्यकता है तो वह एक सादे पेज पर लिखकर रेडक्रॉस सोसायटी में जमा करवा सके। उन्होंने कहा कि वॉलिंटियर्स का एक ग्रुप भी बनाया जाएगा, जिससे कि गांव स्तर पर रक्तदाताओं की एक पूरी टीम तैयार की जा सके और जो भी जरूरतमंद लोगों को मदद की जानी है। महासचिव जोशी ने गत 1 वर्ष से सेवा करने वाले वालंटियर को भी सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया। उन्होंने रेडक्रॉस समिति द्वारा संचालित गांधी कुष्ठ आश्रम पहुंचकर मिष्ठान वितरित किया।

खबर संक्षेप

90 दिवसीय मध्यस्थता अभियान शुरू : सीजेएम

रोहतक। मुख्य न्यायाधीश दंडाधिकारी एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव डॉ. तरन्नुम खान ने बताया कि 30 सितंबर तक लगातार जन जागरूकता अभियान मेडिएशन फॉर द नेशन शुरू किया गया है। कैंपेन की शुरुआत जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण द्वारा वैकल्पिक विवाद निवारण प्रणाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई है। उन्होंने बताया कि सभी के लिए न्याय सुनिश्चित करने के लिए मेडिएशन सेंटर तथा अन्य वैकल्पिक साधनों द्वारा लोगों तक भारतीय न्यायिक तंत्र को मजबूत करने के लिए लाभ पहुंचाना सुनिश्चित करना है। न्यायालय में लगातार बढ़ते हुए मुकदमों के बोझ से छुटकारा दिलवाने के लिए उपरोक्त समझौते की प्रणालियों बहुत उपयोगी साबित होगी।

डॉ. तरन्नुम खान

182 खंडित तिरंगे नगर निगम को सौंपे

रोहतक। मेरा झंडा मेरी शान अभियान के तहत 182 खंडित तिरंगे सम्मानपूर्वक निष्पादन के लिए निगम आयुक्त डॉक्टर आनंद कुमार शर्मा की उपस्थिति में विपिन नरवाल नोडल अधिकारी को सौंपे गए। अभियान संयोजक सुंदर जेटली ने बताया कि 15 अगस्त 2022 के हर घर तिरंगा अभियान के बाद जब देखा गया कि राष्ट्रीय ध्वज खंडित हालत में नजर आ रहा है तो मेरा झंडा मेरी शान अभियान की शुरुआत की गई। इस दौरान सुंदर जेटली, जितेंद्र कुमार , रणबीर मलिक, परवीन सहगल, जसबीर कुमार , हसनगढ़ गांव से ओमबीर, राजेंद्र प्रसाद और नरेंद्र कटारिया , संजय भाटिया विशेष रूप से उपस्थित रहे।

बृजभूषण को बोंद आने से रोके सरकार

महम। बोंद गांव में खिलाड़ी रचना परमार का सम्मान समारोह है। रचना वियतनाम में आयोजित एशियन चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर आई है। विजेता पहलवान के इस सम्मान समारोह में राजनेता एवं कुश्ती संघ के विभिन्न पदों पर आसीन रह चुके बृजभूषण शरण सिंह मुख्य अतिथि होंगे। लेकिन कई संगठनों ने इस बात का विरोध किया है कि वे बोंद के कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं।। नहरा खाप के युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप नहरा ने कहा है कि बृजभूषण का दादरी इलाके में आना बिल्कुल गलत है। बृजभूषण ने विनेश फोगाट और अन्य खिलाड़ियों का अपमान किया था। दादरी के लोगों की जनभावना के विरुद्ध वे इस कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। सरकार व प्रशासन को उसे यहां आाने से रोकना चाहिए। वरना यहां पर यदि कोई घटना हो गई तो इसके लिए सरकार व प्रशासन जिम्मेदार होंगे।

मदवि में डॉ. अंबेड़कर और वंचित समाज विषय पर हुई विचार गोष्ठी

वंचित अनुसूचित जाति के सपनों को साकार कर रही प्रदेश की भाजपा सरकार : मंत्री बेदी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

सामाजिक न्याय, अधिकारिता, अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग कल्याण और अंत्योदय मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने कहा है कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व वाली राज्य सरकार डॉ. भीमराव अंबेड़कर के पदचिन्हों पर चलते हुए वंचित अनुसूचित जाति (डीएससी) के लोगों के सपने को साकार कर रही है। बेदी शनिवार को महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के राधाकृष्णन सभागार में डीएससी छात्र कल्याण संघ हरियाणा द्वारा बाबा साहेब डॉ. अंबेड़कर और वंचित समाज विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने वंचित अनुसूचित जाति के लोगों को शिक्षा में आरक्षण वर्गीकरण का लाभ दिया और मौजूदा मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सरकारी नौकरियों में इस समाज को आरक्षण का लाभ प्रदान करके समाज की वर्षों पुरानी मांग को पूरा किया है। मंत्री ने कहा कि हम सबको मिलकर उन राजनीतिक दलों को एक्सपोज करना होगा। जिन्होंने वर्षों तक डीएससी समाज को उनके अधिकारों से वंचित रखा। उन्होंने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेड़कर की विचारधारा को लेकर कार्य वर्ष 2014 के बाद शुरू हुए। लेकिन समाज के लोग वर्षों तक उन राजनीतिक दलों पर विश्वास करते रहे जो बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेड़कर के विरोधी थे।

रोहतक। डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित करते कृष्ण कुमार बेदी।

रोहतक। कार्यक्रम को सम्बोधित करते मुख्य अतिथि मंत्री कृष्ण कुमार बेदी।

बाबा साहेब ने किया संघर्ष

कार्यक्रम में हरियाणा राज्य अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष डॉ. रविंद्र बलियाला ने कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा वंचित समाज के लिए किया गया संघर्ष अद्वितीय है। उन्होंने कहा कि उनके संघर्ष की बदौलत की हम उसके फल के रूप में सरकारी नौकरी, छात्र आरक्षण, राजनीतिक व प्रशासनिक पदों का आनंद ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि डॉ अंबेडकर को अपने वंचित समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ा। इस मौके पर विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने कहा कि सरकार पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति को उसके हक दिलाने का कार्य कर रही है। कांग्रेस पार्टी वंचित अनुसूचित जाति के लोगों को बहका कर चुनाव में उनके मत तो प्राप्त कर लेती थी। लेकिन सत्ता में आने के बाद उन्हें अधिकारों से वंचित कर दिया जाता था।

विचारधारा आगे बढ़ा रहे

पूर्व मंत्री मनीष कुमार ग्रोवर ने कहा कि वंचित अनुसूचित जाति वर्ग के लिए नायब सिंह सैनी के नेतृत्व वाली सरकार ने आरक्षण का प्रावधान करके डॉ. भीमराव अंबेडकर की विचारधारा को आगे बढ़ाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की गलत नीतियों के चलते ही वंचित समाज को उनके अधिकार नहीं मिल पा रहे थे। ग्रोवर ने कहा कि कांग्रेस के शासनकाल में जब भी वंचित समाज अपने अधिकारों की मांग को लेकर धरना प्रदर्शन करता था तो उन पर लाठी-डंडे बरसा कर अत्याचार किया जाता था। कार्यक्रम में असंध नगर पालिका की चेयरपर्सन सुनीता अडाना, पूर्व विधायक पृथ्वी नंबरदार, पार्षद सुरेश किराड, रिंकू, ज्योति, रमेश बोहर, अनीता बुधवार, कुलविंदर सिक्का सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भैणीभैरों के खेतों में बालू रेत की अवैध माइनिंग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महम

भैणीभैरों गांव में बालू रेत के टीलों से रेत की अवैध माइनिंग की जा रही है। दिन रात बे रोक टोक किए जा रहे इस धंधे से आस पास के बागवानी कर रहे किसानों के खेतों में भारी नुकसान हो रहा है। बागवानी फसलें फल नहीं दे रही और पेड़ पौधों की बढोतरी रुक गई है। इस संबंध में किसानों ने माइनिंग ऑफिसर रोहतक को शिकायत दी है। भैणीभैरों गांव निवासी ओम प्रकाश व बिजेंद्र ने बताया कि उन्होंने किन्नू का बाग लगाया हुआ है। दिन रात उनके बाग के पास से धूल के गुब्बार उठते रहते हैं, जिस वजह से पौधों की वृद्धि रुक गई है और पौधों में फुटाव नहीं हो रहा। पौधों में फल भी नहीं लग रहा। किसान बिजेंद्र ने बताया कि मिट्टी की अवैध माइनिंग को पुलिस भी नहीं रोक रही। क्योंकि यह सारा खेल काला कारोबार करने वाले लोग मिलीभगत से कर रहे हैं।

एसडीएम से मिले किसान

माइनिंग विभाग पर भी लापरवाही करने और मिलीभगत करने का आरोप लगाया है। प्रभावित किसान इस संबंध में महम के एसडीएम से भी मिले हैं। एसडीएम महम ने भी इस संबंध में माइनिंग ऑफिसर रोहतक से मौके का निरीक्षण करके रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा है। कहा है कि मौके पर जाकर सच्चाई का पता लगाया जाए। किसानों ने जिला उपायुक्त धर्मेंद्र सिंह से अवैध खनन को रोकने की मांग की है।

कृष्ण और शिव की इस भूमि पर गाय का खून नहीं बहाने दिया जाएगा

रोहतक। अखंड हरी धाम ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने कहा है कि सनातन धर्म भारत का राष्ट्रीय धर्म है। उन्होंने कहा कि इसकी रक्षा करना प्रत्येक नागरिक की साझा जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात का फक्र है कि भाजपा की सरकार को गंगा व गाय की सरकार कहा जाता है। कृष्ण कुमार बेदी ने कहा कि कृष्ण व शिव की इस भूमि पर गाय का खून नहीं बहाने दिया जाएगा।

इसी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पूर्व मंत्री मनीष कुमार ग्रोवर ने कहा कि संतों के आशीर्वाद से आज पूरी दुनिया में सनातन व भगवा की गूंज है। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म भारत के राष्ट्रीय चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है और इसकी रक्षा करना सभी नागरिकों का कर्तव्य है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे धर्म और संस्कृति समाज में सकारात्मकता, सद्भाव और शांति को बढ़ावा देने में योगदान करते हैं। मंत्रोच्चार के साथ मंदिर की नींव रखी गई और लोगों की सुख, शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना की गई। इस अवसर पर नलवा के विधायक रणधीर पनिहार, देवेंद्र सूर्यवंशी, स्वामी अद्भुतानंद महाराज, महंत ब्रह्म ऋषि श्रीनाथ तथा समाजसेवी राजेश लुम्बा टीनू आदि मौजूद थे।

सांपला में नकली अधिकारी बनकर मेडिकल स्टोर जांचे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सांपला

- बिना नंबर की गाड़ी में आए तीन लोगों ने वसूली का प्रयास किया

कस्बे में कार सवार तीन व्यक्ति मेडिकल स्टोर पर पहुंचे। उन्होंने स्टोर पर अवैध वसूली के लिए प्रतिबंधित दवा की जांच भी की। दुकानदार को कार्रवाई करने की धमकी देकर अवैध वसूली का भी प्रयास किया। लेकिन स्टोर संचालक ने कोई भी पैसा देने से इनकार कर दिया। उसके बाद व्यक्ति गिझी मोड के पास दूसरे मेडिकल स्टोर पर पहुंची। वहां भी उन्होंने प्रतिबंध दवाइयां की जांच का नाटक किया। बताया गया तीनों लोग सादे कपड़ों में थे। उन्होंने कहा कि आप लोग प्रबंध दवाइयां बेच रहे हैं। लेकिन उन्होंने कोई भी ऐसी दवाई नहीं मिली। यह बात कस्बे के अन्य मेडिकल स्टोर के संचालकों के भी पास पहुंची तो उनमें भी हड़कंप मच गया। मेडिकल स्टोर एसोसिएशन के प्रधान कविराज ने बताया कि बिना नंबर की कार में तीन लोग आए थे। उन्होंने मेडिकल स्टोर पर छापेमारी का नाटक कर वसूली का प्रयास किया लेकिन स्टोर संचालक ने कहा कि वे नियमों के अनुसार दवाइयां बेच रहे हैं।

पठानिया पब्लिक स्कूल में जीवन शैली सुधारने के लिए कार्यशाला का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

पठानिया पब्लिक स्कूल में आईएचएम, एमडीयू के निदेशक डॉ. आशीष दहिया ने एक महत्वपूर्ण सत्र को संबोधित किया। यह कार्यक्रम केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पहल पर आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य विद्यालयों में 'शुगर बोर्ड्स' की स्थापना के अंतर्गत छात्रों को अत्यधिक चीनी सेवन के खतरों के प्रति जागरूक करना और उन्हें उचित आहार विकल्पों के बारे में जानकारी देना था।

डॉ. दहिया ने बच्चों को अत्यधिक शर्करा सेवन के दुष्परिणामों, विशेष रूप से किशोरों पर इसके प्रभाव, के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने संतुलित और स्वास्थ्यवर्धक आहार अपनाने पर जोर दिया तथा छात्रों से आग्रह किया कि वे "सचेत भोजन" के दूत बनें और अपने दैनिक जीवन में बेहतर खाद्य विकल्पों को अपनाएं।

सत्र में उन्होंने कई व्यावहारिक सुझाव दिए, वास्तविक जीवन के उदाहरण साझा किए और छात्रों से संवादात्मक रूप से जुड़कर विषय को रोचक एवं प्रभावशाली बनाया। उन्होंने पीएम मोदी की ''मन की बात'' कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय खिलाड़ियों से अच्छी सेहत व अच्छी जीवन शैली के बारे में वार्तालाप को साझा करते हुए युवा पीढ़ी को प्रेरित किया।

इस अवसर पर विद्यालय की को-फाउण्डर श्रीमती वर्षा पठानिया, निदेशक अंशुल पठानिया, प्रधानाचार्या तन्वी पठानिया, उप-प्रधानाचार्या प्रीति ढांडा व समन्वयक कनिका मग्गु की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन को विशेष बना दिया। प्रधानाचार्या तन्वी पठानिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अच्छे स्वस्थ्य के प्रति जागरुक रहने की सीख दी व कहा कि "आज की स्वास्थ्यवर्धक आदतें ही कल के उज्ज्वल भविष्य की नींव हैं।" यह पहल राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) और सीबीएसई द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुरूप, छात्रों के लिए एक स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में विद्यालय का एक और सार्थक कदम है।

दयानन्द मठ में मासिक वैदिक सत्संग का आयोजन आज

रोहतक। श्री सत्यवान आर्य कार्यालयाधीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा पंडित जगदेवसिंह सिद्धांती भवन दयानन्द मठ में सुबह 9 बजे से 12.30 बजे तक 6 जुलाई को मासिक वैदिक सत्संग का आयोजन किया जाएगा। जिसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक उपेन्द्र आर्य (चंडीगढ़) होंगे तथा महिलाओं एवं बच्चों के मधुर गीत भी प्रस्तुत किए जाएंगे एवं सत्यनारायण आर्य, हनुमत आर्य (मकड़ौली) आदि भजनोपदेशक अपने सुन्दर भजन प्रस्तुत करेंगे। इस कार्यक्रम का संचालन सुभाष सांगवान प्रधान, वेदप्रचार मंडल जिला रोहतक करेंगे। सुबह 9 बजे यज्ञ किया जाएगा। उन्होंने कहा कि परिवार सहित बड़े जोश और उल्लास के साथ समय पर इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर महान वैदिक परम्परा को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देवें। शांतिपाठ के साथ सत्संग का समापन किया जाएगा। इसके बाद सभी आर्यजन सामूहिक रूप से ऋषिलंगर में भोजन करेंगे।

इंडस पब्लिक स्कूल में अंतरसदनीय खेल प्रतियोगिताओं में दिखाई प्रतिभा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

इंडस पब्लिक स्कूल में 5 जुलाई को अंतर्सदनीय खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें लूडो, कैरम, शतरंज, बैडमिंटन आदि खेलों का आयोजन किया गया। इस रोचक मुकाबले में चारों सदनों क्रमशः ब्यास, झेलम, रावी व सतलुज के छात्रों ने उत्साह व रूचिपूर्वक भाग लिया। शारीरिक शिक्षकों ने सभी प्रतिभागियों को खेल संबंधी नियमों की जानकारी दी, सभी खिलाड़ी एक-दूसरे को कड़ी चुनौती प्रस्तुत करते नजर आए।

कक्षा तीसरी में लूडो में झेलम सदन से छात्रा भावी, कैरम में रावी सदन से छात्र प्रिंस प्रथम स्थान पर रहे। कक्षा चार से लूडो में रावी सदन से छात्रा गरिमा, कैरम में ब्यास सदन से छात्र विहान प्रथम स्थान पर रहे। कक्षा पांचवी में शतरंज में रावी सदन से रिया, बैडमिंटन में कक्षा पांचवी में झेलम सदन से हर्षित, कक्षा छठी से शतरंज में सतलुज सदन से वैभव, बैडमिंटन में कक्षा छठी से रावी सदन का रेहान, कक्षा सातवीं में शतरंज में झेलम सदन की निष्ठा, कैरम में सतलुत सदन की कृतिका, बैडमिंटन में सतलुज सदन से वंशिका, शतरंज में रावी सदन से आकाश और कैरम में ब्यास सदन से धैर्य, बैडमिंटन में सतलुज सदन से जागृत प्रथम स्थान पर रहे। कक्षा आठवीं में शतरंज में रावी सदन से छात्रा समीहा व झेलम सदन से छात्र शिव, कैरम में सतलुज सदन से नव्या, और रावी सदन से निशांत, बैडमिंटन में ब्यास सदन से दिव्या और लक्ष्य स्थान पर रहे। ओवरऑल में रावी सदन प्रथम, झेलम द्वितीय, सतलुज तृतीय और ब्यास चतुर्थ स्थान पर रहे। विद्यालय की चेयरपर्सन डॉ. एकता सिंधु ने कहा कि खेल स्पर्धाओं से विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा मिलता है। खेलों से विद्यार्थियों को अपने जीवन में लक्ष्य हासिल करने के लिए शारीरिक व मानसिक क्षमताओं पर कार्य करने का मौका मिलता है। प्राचार्या दीपक कुमार ने कहा कि इस तरह की खेल प्रतियोगिताओं का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में खेल के प्रति रूचि बढ़ाना, अनुशासन, और खेल मूल्य जैसे कौशल सिखाना है।

रोहतक। प्रतियोगिता में प्रतिभा दिखाती छात्राएं।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20,
फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

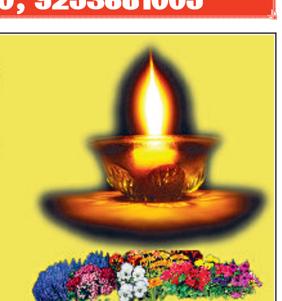

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

प्रधान गुलाब सिंह दिमाना ने पत्रकार वार्ता में दी जानकारी

जाट शिक्षण संस्था के कार्यों में है पारदर्शिता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

जाट शिक्षण संस्था के प्रधान गुलाब सिंह दिमाना ने कहा कि संस्था कॉलेजों में कई नए रोजगारोन्मुखी कोर्स शुरू करने, नई इमारतें बनाने, सर छोटू राम के समाधि स्थल का जीर्णोद्धार करने व पढ़ाई के लिए विशेष सुविधाएं देने पर हमारी प्रबंध कार्यकारिणी का विशेष फोकस है। इन कार्यों को ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ समाज के लोगों को विश्वास में लेकर पूरा किया जा रहा है।

दिमाना शनिवार को पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। दिमाना ने इससे पहले, संस्था की जनरल हाउस की मीटिंग में पहुंचे कॉलेजियम सदस्यों के सामने एक वर्ष का लेखा-जोखा रखा, इसमें सभी 71 सदस्यों ने सहमति जताते हुए संस्था के विकास में हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

प्रधान दिमाना ने बताया कि पिछले एक वर्ष में समाज के लोगों को साथ लेकर कई विकास कार्यों को पूरा करवाया जा चुका है। जिसमें क्रिकेट स्टेडियम के सुधारीकरण के साथ-साथ शूटिंग रेंज तैयार करवाने ,सुरक्षा व्यवस्था बेहतरीन करने, खेल मैदानों को ठीक करवाने का कार्य चल रहा है। उन्होंने संस्था द्वारा संचालित दोनों स्कूलों में एडमिशन को लेकर चिंता जताते हुए कहा कि की इन ऐतिहासिक स्कूलों को फिर से वही रुतबा दिलवाने के लिए कई लोग सामने आ रहे हैं। जिस पर विशेष कार्य चल रहा है। उन्होंने कहा कि प्रबंध कार्यकारिणी द्वारा किए गए कार्यों को समाज का कोई भी व्यक्ति आकर देख सकता है। हर एक कार्य में पूरी ईमानदारी व पारदर्शिता रखी जा रही है।

रोहतक। पत्रकारों से बातचीत करते जाट शिक्षण संस्था के प्रधान गुलाब सिंह दिमाना।

नई भर्ती की प्रक्रिया शुरू करेंगे

गुलाब सिंह दिमाना ने कहा कि जाट कॉलेज, महारानी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय, छोटू राम विधि महाविद्यालय, छोटू राम पॉलिटेक्निक, और मातूराम इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट में इसी शैक्षणिक सत्र से कई कोर्स शुरू किये जा रहे हैं। सरकार की मदद लेकर जल्द ही शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारियों की नई भर्ती को लेकर भी प्रक्रिया शुरू करेंगे। इस अवसर पर संस्था के उप प्रधान धर्मराज, महा सचिव नवदीप (मोनू), राजेश तहलान, जोगेंद्र कोच, सुरेंद्र दुल, जयकुमार, राजपाल बुधवार, सुनील सिन्हा, डॉ. कपूर ढाका, वेदपाल नैन, वेदपाल होसादपुर, प्रदीप मलिक, रामफल लाखन माजरा, सुरेंद्र बरहाना, महिपाल, सतबीर भालौठ, सतीश मौजूद रहे।

जाट भवन में सम्मान समारोह आज, शिक्षामंत्री ढांडा आएंगे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

- जाट सभा द्वारा केंद्रीय एवं राज्य प्रशासनिक सेवाओं में चयनित समाज के अभ्यर्थियों को सम्मानित किया जाएगा
- जाट सभा के प्रधान जयवीर सिंह ढुल ने दी जानकारी, कार्यक्रम की सभी तैयारियां पूरी

जाट सभा रोहतक की शनिवार को सेक्टर एक स्थित जाट भवन में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता जाट सभा के प्रधान जयवीर सिंह ढुल ने की। उन्होंने बताया कि जाट सभा द्वारा केंद्रीय एवं राज्य प्रशासनिक सेवाओं में चयनित समाज के अभ्यर्थियों के लिए 7 जुलाई को प्रतिभा सम्मान व प्रोत्साहन समारोह का आयोजन किया जाएगा। समारोह में मुख्य अतिथि प्रदेश के शिक्षामंत्री महिपाल ढांडा होंगे। इस दौरान सभा के आजीवन सदस्य व कार्यकारिणी सदस्य मौजूद रहेंगे। इस दौरान जाट सभा के प्रबंधक सुरेश नांदल, रणबीर पहलवान, डॉ. नरेंद्र गहलावत, जयपाल मलिक, सतबीर सिंह छिकारा, सतीश दहिया, अशोक कुण्डू, जगमाल नरवाल, दीपक खत्री, सेवा सिंह हुड्डा, महेंद्र प्रताप गुलिया, रमेश मोर, सुरेंद्र लौरा, रविंद्र श्योराण, सुशील नांदल उपस्थित रहे।

विशेषः विश्व जनसंख्या दिवस
11 जुलाई

पिछले दो-तीन दशकों में शहरी जनसंख्या के अनियंत्रित रूप से बढ़ने की वजह से लोगों का जीवन समस्याओं से घिरता जा रहा है। इससे साफ हवा-पानी की कमी, ट्रैफिक जाम, रहने के लिए असुविधाजनक आवास समेत कई तरह की परेशानियों के साथ लोग जीने के लिए बाध्य हैं। आने वाले वर्षों में उत्पन्न होने वाले गंभीर संकटों से बचने के लिए इन चुनौतियों पर गंभीरता से विचार करना होगा।

जीवन कठिन बना रही शहरों की बढ़ती जनसंख्या

कवर स्टोरी/शैलेंद्र सिंह

भारत में तेजी से बढ़ते शहरीकरण ने लोगों के लिए आर्थिक अवसर तो पैदा किए हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि इससे लोगों के जीवन की गुणवत्ता में बहुत गिरावट आई है। यानी बढ़ते शहरीकरण ने शहरों में रहने वाले लोगों के जीवन को बहुत तकलीफदेह बना दिया है। ये पूरी दुनिया की समस्या नहीं बल्कि भारत और कुछ अन्य विकासशील देशों की ही है, जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप में बांग्लादेश और पाकिस्तान भी शामिल हैं।

शहरों में नागरिक सुविधाओं की कमी

आजादी के बाद देश में तेजी से शहरीकरण बढ़ा और इस दौरान शहर, देश के आर्थिक अवसरों का केंद्र बन कर भी उभरे। लेकिन भारत में शहरों की तरफ गांवों से बहुत तेज पलायन हुआ, जिसने शहरों में जीवन जीने की स्थितियों को बहुत गहरे तक प्रभावित किया है। नागरिक सुविधाओं का देश के लगभग हर शहर में अभाव है। आज देश का शायद ही कोई ऐसा शहर हो, जो पूरी तरह साफ-सुथरा, खुला-खुला और नागरिक सुविधाओं से भरपूर हो। हर शहर में कुछ इलाके तो बहुत अच्छे हैं, लेकिन सभी शहरों के ज्यादातर हिस्से सुविधाओं की नजर से समस्याओं से ग्रस्त दिखते हैं। चाहे मुंबई हो, दिल्ली हो, बेंगलुरु हो या हैदराबाद। देश और दुनिया के ये बड़े-बड़े शहर आज बड़ी-बड़ी उपलब्धियों के गढ़ तो हैं, लेकिन इन बड़े शहरों में बहुसंख्यक लोग भीषण परेशानियों के बीच रह रहे हैं।

अनियोजित शहरीकरण

अपने देश में 80 के दशक के बाद से इतना तेज शहरीकरण हो रहा है कि देश का कोई भी शहर अपनी बढ़ने वाली जनसंख्या को ध्यान में रखकर नगर नियोजन का काम नहीं कर पा रहा है। हर शहर अगले 10 सालों तक जितनी

जनसंख्या का अनुमान लगाकर नियोजन करता है, जनसंख्या हमेशा उससे दो से तीन गुना बढ़ जाती है। यही कारण है कि भारत के सभी बड़े शहर अनियोजित शहरीकरण की समस्या से जूझ रहे हैं। यहां तक कि कानपुर, लुधियाना, भोपाल, अमृतसर, कोल्हापुर और राजकोट जैसे मझौले शहर भी जनसंख्या के दबाव से इस कदर अव्यवस्थित हो गए हैं कि इनकी आधारभूत संरचना के मुकाबले कई गुना ज्यादा इन पर जनसंख्या का दबाव है। दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु जैसे महानगर लाख प्रयासों के बावजूद पिछले कई दशकों में अपने शहर की झुग्गी बस्तियां नहीं खत्म कर सके और न ही इन झुग्गी बस्तियों को साफ पानी, सीवर या बिजली की सुविधा दे सके हैं।

बढ़ते ट्रैफिक में फंसे शहर

आवास और बिजली, पानी की समस्या तो शहरों में है ही, लगभग सभी शहर आज सबसे बड़ी जिस समस्या से जूझ रहे हैं, वह है-सड़कों पर वाहनों की बेतहाशा वृद्धि। अंधाधुंध बढ़े वाहनों के कारण बेंगलुरु और मुंबई जैसे शहर तो थम से गए हैं। बेंगलुरु में पीक आवर्स में सड़कों पर यातायात बिल्कुल रेंगता है। 10 किलोमीटर की दूरी अकसर लोग कार से डेढ़ से दो घंटे में तय कर पाते हैं। यहां की सड़कें बिल्कुल चोक्ड हो गई हैं, उन पर क्षमता से 300 फीसदी से ज्यादा वाहन दौड़ रहे हैं। इसीलिए आज वहां की सबसे बड़ी समस्या ट्रैफिक की है। इससे भी खराब दशा मुंबई की है। मुंबई में पीक आवर्स में सड़क यातायात की रफ्तार 5 से 10 किलोमीटर प्रतिघंटा होती है। कमोवेश सभी शहरों का यही हाल है। यही वजह है कि आज हर एक घंटे में भारत के सिर्फ शहरों में 150 से लेकर 180 लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर रहे हैं।

नागरिक सुविधाओं का अभाव

देश में बड़े शहर तेजी से फैल रहे हैं, जहां स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, कचरा प्रबंधन, सीवर और सुरक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएं हर किसी के लिए नहीं हैं। सिर्फ कुछ लोगों के लिए ही हैं। शहरों की कुछ कालोनियों में ही नियमित रूप से साफ पानी आता है, सड़कें सपाट और चौड़ी हैं, स्कूल, अस्पताल आदि की सुविधाएं हैं। जबकि शहरों के बड़े हिस्से इन सुविधाओं से वंचित हैं। यही कारण है कि नागरिक सुविधाओं के नजरिए से देश के बड़े शहरों में पर्यावरणीय संकट भी विकट है। पिछले दो दशकों में लाखों की तादाद में पेड़ काटे गए हैं। बस्तियों के बीच मौजूद तालाब, नाले आदि सब पाट दिए गए हैं। शहरों के बीच से बहने वाली नदियों को सीवर में तब्दील कर दिया गया है। यही कारण है कि देश के बड़े शहर, वायु प्रदूषण, जल भराव, हीट वेव और घटते भू-जल स्तर की समस्याओं से दो चार हैं।

जीवन की गुणवत्ता में गिरावट और तनाव

देश के शहरों में आम लोगों का जीवन जिंदगी की गुणवत्ता से जंग कर रहा है। बहुसंख्यक शहरी लोगों के जीवन में मजबूत सामाजिक संबंध नहीं रहे। समय और जगह की कमी है। मानसिक बीमारियों का रेला है और खालीपन व असुरक्षा का लगातार घेरा बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण लोगों के आम जीवन में जबर्दस्त सामाजिक तनाव और असमानता व्याप्त है। कुल मिलाकर भारत में पिछले चार दशकों में जनसंख्या का जो तेज शहरीकरण हुआ है, उसके कारण हमारे शहरों की व्यवस्था को बनाए रखना बड़ी चुनौती बन गया है। *

कोठरियों में रहते लोग

यूं तो हर शहर में कुछ चमचमाती हुई इमारतें होती हैं, कुछ बड़े-बड़े बंगले होते हैं। लेकिन शहरों का 70 से 75 फीसदी हिस्सा घरों का नहीं, कोठरियों या छोटे-छोटे दड़बों का जंगल बन गया है। मध्यम और निम्न वर्ग के लिए सस्ते घरों में गरिमामय आवास की कल्पना नहीं की जा सकती। मुंबई में तो 250 से 300 फीट के एक कमरे वाले फ्लैट लेना भी सपने जैसा हो चुका है, क्योंकि ये छोटे-छोटे दड़बे भी 40 से 50 लाख रुपए के मिलते हैं। भारत के लगभग सभी शहरों में प्राइवेट बिल्डर फ्लैट्स और कॉलोनियों की भरमार है, जहां रहने के लिए आवास को गरिमामय बनाने का कोई मापदंड नहीं है। यहां झुग्गियां, किराए के लिए मकान और अनधिकृत कॉलोनियों की अंतहीन रेंज हैं। दिल्ली में 80 से 90 लाख लोग अनधिकृत कॉलोनियों में और 30 से 35 लाख लोग झुग्गी बस्तियों में रहते हैं। जहां लोगों को न तो भावनात्मक सुरक्षा है और न ही मनोवैज्ञानिक निजता।

बदलाव / नरेंद्र शर्मा

इसमें संदेह नहीं कि आज के दौर में लगभग हर क्षेत्र में एआई की घुसपैठ बढ़ रही है। साहित्य, संगीत और कला में भी इसकी एंट्री हो चुकी है। लेकिन लाख कोशिश के बाद भी इससे निर्मित आर्ट प्रोडक्ट, हमारे मन को स्पर्श नहीं कर पाता है।

मन को नहीं छू पाता एआई का आर्ट प्रोडक्ट

आज पूरी दुनिया में इस आशंका का सवाल गहराता जा रहा है कि क्या एआई, कला से उसकी स्वाभाविक कल्पनाशीलता, मौलिकता और कलात्मकता छीन रहा है? दरअसल, कला का मूल स्वभाव सृजन है। ऐसा सृजन, जो व्यक्ति की भावनाओं, संवेदनाओं, अनुभवों और कल्पनाओं से उपजता है। चित्रकला, संगीत, साहित्य, मूर्तिकला या रंगमंच। ये सभी विद्याएं मानवीय कल्पना शक्ति का विस्तार हैं। विविध रूपीय विस्तार। लेकिन अब एआई द्वारा कुछ ही सेकेंड में चित्र बनाए जा रहे हैं, कहानियां लिखी जा रही हैं, संगीत रचा जा रहा है, तो क्या ये सारी एआई से पैदा होने वाली कलाएं उस मानवीय कल्पनाशीलता की बराबरी करती हैं? यह सवाल इसलिए भी जरूरी है कि अगर वास्तव में ऐसा होता है तो लगता है कि आजतक के मानव विकास क्रम को मशीन यानी एआई ने एक झटके में अर्थहीन कर दिया है। लेकिन ऐसा सोचना सही नहीं है।

भावनाहीन होते हैं एआई प्रोडक्टः एआई टूल हजारों पुराने चित्रों के डेटा के आधार पर नई पेंटिंग क्षणभर में बना दे रहे हैं। आप अगर इन एआई टूल्स से कहते हैं कि एक महिला जो समुद्र की लहरों से बनी है और जिसकी आंखों में तारे झिलमिला रहे हैं, ऐसी पेंटिंग बनाओ तो ये टूल्स एक क्षण में यह पेंटिंग्स बना करके हाजिर कर देंगे। लेकिन क्या ये पेंटिंग्स उस कलाकार की पेंटिंग जैसी होंगी, जो समुद्र किनारे अपना पेंटिंग स्टैंड लगाए घंटों लहरों से आंखमिचौली करते हुए अपनी कल्पना में रंग भरता है। जी नहीं, बिल्कुल नहीं होगी। इस कलाकार की पेंटिंग्स में जो कलाकृति उभर कर आएगी, वह भावनाओं से संवाद करेगी। एआई की कल्पना ऐसा नहीं कर सकती। कलाकार की बनाई गई पेंटिंग संभावनाओं का आंकड़ा नहीं होगी, क्योंकि वह पहले से दुनिया में मौजूद किसी पेंटिंग की प्रतिकृति नहीं गढ़ रहा होगा, उसके मन में एक नई ही छवि मूर्तवत हो रही होगी, जो पहले नहीं होगी। जिसकी आंखों में कलाकार की भावनाएं, संवेदनाएं सब कुछ बोल रही होंगी। लेकिन एआई को यह सब नहीं करना। उसे अपने डाटा स्टोर में मौजूद आंकड़ों के मेल से एक नई फोटो कॉपी भर गढ़नी है। फर्क सिर्फ इतना होगा कि एआई किसी एक कलाकृति की बजाय बहुत सी कलाकृतियों को आपस में मिक्स करके उनसे एक नई कलाकृति निर्मित करने का भ्रम भर रचेगा। इसलिए, कहा जा सकता है कि एआई कला का पुनरोत्पादन तो कर सकता है पर कला सृजन नहीं कर सकता। इसलिए एआई कलाकारों से उनकी कल्पनाशीलता नहीं छीन सकता।

अनुभूति को नहीं दे सकता शब्दः अब जीपीटी मॉडल हिंदी और अंग्रेजी में आदेश पर कविताएं लिख रहे हैं। मसलन, आप उनसे कहें एक प्रेम कविता लिखो, जिसमें बारिश भी हो, मन का उल्लास भी हो, तारे सितारे छूने की कल्पनाशीलता भी हो, तो वह शब्दों के उस ढांचे में जिसे कविता कहना कहीं से उचित नहीं होगा, में डाल तो देगा, लेकिन वे शब्द कभी दिल को नहीं छुएंगे। यह एक किस्म की मशीनी शब्द उत्पाद होगा। ऐसी कविता न कवि को खुशी देगी और न ही कविता सुनने वालों को कहीं से प्रेरित कर सकेगी। अगर यही प्रेम कविताएं होंगी, तो फिर कविता का कोई मतलब नहीं रह जाएगा। इसलिए एआई कुछ भले कर लें या चाहे करता दिखे, लेकिन वह न तो इंसानी भावनाओं की नकल कर सकता है और न ही इंसानी अनुभूति को शब्द या कैनवास में उतार सकता है। एआई के लिए बारिश एक गतिविधि भर है और किसी कवि या कलाकार के लिए बारिश एक समूचा जीवन है, जीवन धड़कन है और उसकी एक-एक बूंद पर उसकी लाखों अनुभूतियों का बसेरा हो सकता है। कवि या कलाकार की रचना केवल शब्दों या रंगों का संगठन भर नहीं होगा, वो अनुभूति की एक जीवंत दुनिया होगी। इसलिए, एआई कितनी भी तेज रफ्तार से कला की प्रतिकृतियां रचने में चौंका रहा हो, पर कभी दिल और दिमाग को झंकृत नहीं कर पाएगी।

बनी रहेगी कला की जीवंतताः एआई के बारे में यही बात संगीत रचना, थिएटर और अभिनय आदि पर भी लागू होती है। एआई का कोई टूल किसी रंगमंच के अभिनेता की जगह नहीं ले सकता। एआई की सजगता, उसकी मशीनी चातुरी कभी किसी नाटक की स्क्रिप्ट की जगह नहीं ले सकती। एआई कला से या कलाकारों से उनकी कल्पनाशीलता या जीवंतता की अनुभूति कभी नहीं छीन सकती। *

जीवनशैली
भूपेंद्र भारतीय

सही नहीं हर बात पर साधे रहना चुप्पी

जिस तरह बेवजह और जरूरत से ज्यादा बोलना सही नहीं होता, उसी तरह जरूरत के समय ना बोलना या हमेशा चुप्पी साधे रहना भी नुकसानदेह होता है। इस मामले में सोच-समझकर एक संतुलन की जरूरत होती है।

मानव जीवन की सबसे सुंदर विशेषता है, उसे ईश्वर द्वारा मिली अभिव्यक्ति की शक्ति। अभिव्यक्ति को एक शक्ति ही माना जाना चाहिए, जो इस ब्रह्मांड में सिर्फ मानव को पूर्ण रूप में मिली है। लेकिन क्या हम अभिव्यक्ति की इस शक्ति का सही उपयोग कर पाते हैं? यह प्रश्न हमें स्वयं से पूछना चाहिए।

हो सकती हैं कई समस्याएंः सामान्य तौर पर अपनी बात कहना या फिर कुछ बोलना ही अभिव्यक्ति करना कहा जाता है। वहीं कुछ नहीं बोलना मतलब चुप रहना। हालांकि किसी मामले में चुप रहना भी अभिव्यक्ति का ही एक रूप माना जाता है, लेकिन जब जरूरत हो तब अपनी बात, विचार व्यक्त न करना, कई पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं को जन्म दे सकता है। यही नहीं हमेशा चुप्पी साधे रखना मानसिक रोग की भी वजह बन सकती है। हर इंसान के जीवन में ऐसे अवसर अकसर आते रहते हैं, जब उसे चुप रहना पड़ता है। लेकिन क्या हमेशा चुप रहना, उसके आस-पास के परिवेश के लिए उचित होता है? यह प्रश्न ही यहां सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण है, जो चुप्पियों को जन्म देता है। ऐसी चुप्पियां हमें भारी नुकसान पहुंचाती हैं। हमें अंदर से धीरे-धीरे तोड़ती जाती हैं। हमें पल-पल कमजोर करती रहती हैं। सच्चाई यह है कि जरूरत से ज्यादा चुप्पियां, हमें प्रतिपल दीमक की तरह खोखला करती रहती हैं।

हमेशा ना रहें खामोशः प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' का प्रसिद्ध कथन है, 'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?' यह कथन उचित समय पर चुप्पियों को तोड़ने का बल देता है,

वहीं यह संदेश भी देता है कि सही बात को बोलना ही चाहिए। भले ही छोटा-मोटा बिगाड़ हो जाए। लाख कोशिशों के बाद भी, एक न एक दिन कितनी भी बड़ी चुप्पी हो उसे तोड़ना ही पड़ता है, नहीं तो वह चुप्पी आपको तोड़ देगी।

हो सकते हैं महाविनाशः चुप्पी के कारण महाभारत जैसे युद्ध तक हो सकते हैं। दुर्योधन और दुःशासन के अनाचार के समय अगर भीष्म, द्रोणाचार्य और धृतराष्ट्र समेत दरबार में उपस्थित अन्य लोगों ने चुप्पी तोड़ दी होती, अनाचार को रोकने के लिए आवाज उठाई होती तो महाभारत कभी नहीं होता। इसी तरह धर्मराज युधिष्ठिर ने अपनी माता कुंती को महाभारत युद्ध के बाद कहा था, 'माता, कर्ण से जुड़ा सत्य आपने छुपाकर बहुत बड़ी गलती कर दी।'

चुप्पी साधने के कारणः चुप्पी साधने के अनेक कारण हो सकते हैं। हम डरते हैं कि हमारे बोलने से कोई नुकसान ना हो जाए। वह फिर मानव संबंधों का मामला हो या फिर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि से जुड़े मामले हों। हमारे सत्य बोलने से किसी को बुरा लग सकता है और हम अपने संबंधों को बिगाड़ना नहीं चाहते, किसी को नाराज नहीं करना चाहते। वास्तव में सत्य डरावना या फिर बुरा नहीं होता है। लेकिन हम सत्य की सुंदरता देख नहीं पाते। इसी सत्य की शक्ति के स्वरूप हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में लिखते हैं, 'सत्य के लिए, किसी से भी न डरना, गुरु से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।' यह डर ही हमको बहुत सी बातें ना कहने के लिए विवश करता है कि चुप रहो। यह चुप रहना ही धीरे-धीरे चुप्पियों का बड़ा रूप ले लेता है और हमारे अंदर डर का एक मकड़जाल बन जाता है। हम यथार्थ से भागने लगते हैं।

बढ़ रही हैं जीवन में चुप्पियांः वर्तमान दौर में मोबाइल और इंटरनेट जैसी तकनीकी ने भी हमें चुप्पी और संवादहीनता की ओर बढ़ाया है। परिवार में हर कोई इन्हीं में व्यस्त रहता है। जहां संवाद नहीं वहां जीवन और समाज आगे नहीं बढ़ सकता है। प्रसिद्ध संत तरुण सागर कहते हैं, 'समाज, परिवार और आपसी संबंधों से कभी संवाद बंद मत करो। जिस दिन आपने संबंधों में बोलना बंद किया, उस दिन से आपके संबंध धीरे-धीरे टूटना शुरू हो जाएंगे। इसलिए बोलना कभी बंद मत करना।' *

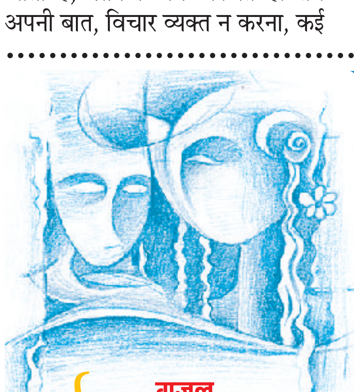

गजल
वसीम अहमद

करार आने लगा है

जो कुछ-कुछ एतबार आने लगा है
तो इस दिल को करार आने लगा है
जैसे-जैसे है उनसे अपनत्व जागा
मुसलसल उनपे प्यार आने लगा है
कि जब से घर में दर्पण आ गया है
उन्हें करना सिंगार आने लगा है
परस्पर दिल्लगी जब से बढ़ी है
तो रिश्तों में सुधार आने लगा है
हूं जब से उनको अपना मान बैठा
मेरे दिल को करार आने लगा है।
निगाहों को निगाहें पढ़ रही हैं
मुसलसल एतबार आने लगा है

व्यंग्य
सूर्यकुमार पांडेय

जिनका काम सूखी तनख्वाह से चल जाता हो, वे फिक्र न करें! किंतु जो सतत सेविंग में विश्वास रखते हैं, निलंबन उनके लिए राजकीय वरदान है। इसीलिए मूरख रोते हैं और ज्ञानी फरमाते हैं, काम विलंबित करो, निलंबित हो जाओ! फिर कोई और पार्ट टाइम कमाई वाला काम करो।

निलंबन में मजा है

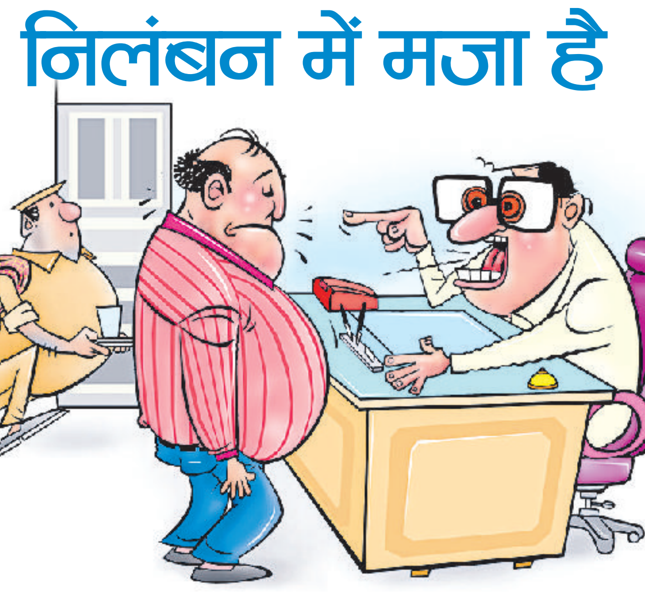

वह सरकारी काम, काम नहीं होता, जो लंबित न रहे और वह सरकारी अफसर, अफसर नहीं, जो नौकरी में एक-दो बार निलंबित न रहे। सस्पेंड होना बुरा नहीं है। बुरा होता है, निलंबित होकर फटाफट बहाल हो जाना। निलंबित हुए बिना महंगाई भत्ता, नगर प्रतिकर भत्ता आदि बहुत सारे भत्ते मिल सकते हैं, मगर निलंबन भत्ता नसीब नहीं हो सकता।

जिनका काम सूखी तनख्वाह से चल जाता हो, वे फिक्र न करें! किंतु जो सतत सेविंग में विश्वास रखते हैं, निलंबन उनके लिए राजकीय वरदान है। इसीलिए मूरख रोते हैं और ज्ञानी फरमाते हैं, काम विलंबित करो, निलंबित हो जाओ! फिर कोई और पार्ट टाइम कमाई वाला काम करो। मेरे एक डॉक्टर मित्र हैं। अपने सीनियर अफसर से जान-बूझकर पंगा ले बैठे। सस्पेंड हो गए। अब शान से प्राइवेट प्रैक्टिस झाड़ रहे हैं। विभाग ने हर मुमकिन कोशिश की कि वह बहाल हो जाएं, वह खुद ही मुकर गए। सस्पेंशन रस का स्वाद उनके मुंह लग चुका है।

वह जानते हैं, सरकार दयालु है। एक-न-एक दिन पाई-पाई जोड़कर बुढ़ापे के वक्त उनकी चारपाई पर धर जाएगी। अब वह अपने उसी सस्पेंडक सीनियर अफसर को मासिक रूप से बंधी रकम पहुंचाते हैं। इसलिए नहीं कि बहाल हो जाएं, बल्कि इसलिए कि निलंबन बरकरार रहे। इस भांति दोनों सुखी और संपन्न हैं। डॉक्टर साहब की प्राइवेट प्रैक्टिस चल रही है, बड़े साहब की पब्लिक प्रैक्टिस। पारस्परिक सद्भावना सुदृढ़ है। जनसेवा और राजसेवा साथ-साथ चलायमान हैं।

मेरे एक और मित्र बड़े अफसर हैं। ऊंची पकड़ के चलते बरसों से एक ही जिले में अटके हुए हैं। उनके पास तरह-तरह के तिकड़मी डंडे हैं। पर वह पूरे जिले को एक ही डंडे से हांकते हैं। स्वभाव से मृदु हैं। अंदाज दोस्ताना है। मैं अकसर वार्तालाप की तलब उठने पर अपनी शामें जाया करने उनके सरकारी अजायब खाने पर पहुंच जाया करता हूं।

उस रोज गया, तो उनका चपरासी चौंकता हुआ बोला, 'अरे, आपको नहीं मालूम, अपने साहब तो हसबैंड होइ गए!'

अब चौंकने की बारी मेरी थी। मैं जानता था, साहब कुंआरे हैं। न सगाई, न न्यौता, न दावत!

यह साहब हसबैंड कब हो गए? दिमाग पर जोर डाला, तो समझ में आया कि यह साहब हसबैंड नहीं, सस्पेंड हो गए हैं। और सच भी यही है, हसबैंड ओर सस्पेंड होने में कोई खास फर्क नहीं होता। ये दोनों ही हो जाने के बाद आमदनी का एक हिस्सा किसी और की भेंट हो जाया करता है। तब कमाई के नए जरिए तलाशने ही पड़ जाते हैं। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी लघुकथाएं

अलका 'सोनी' की लघुकथाएं और कविताएं पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। सरल-सहज लहजे में वे जीवन की सूक्ष्म संवेदनाओं को अपने लेखन में व्यक्त करती हैं। हाल में छपकर आए उनके लघुकथा संग्रह 'हवा में बनती हैं नई जगहें' की लघुकथाओं में भी इसकी बानगी देखी जा सकती है। 'टूटा तारा' लघुकथा के जरिए लेखिका ने शहरी जीवनशैली की विडंबनाओं और उसके फलस्वरूप नई पीढ़ी की प्रकृति से बढ़ती दूरी को मार्मिक तरीके से उभारा है। इसी तरह 'जिंदगी का डिस्काउंट' लघुकथा में भी आधुनिक जीवनशैली में बिसरती जा रही खुशी और अपनेपन की परिभाषा पर प्रभावी तरीके से कटाक्ष किया गया है। 'पापा का कोना' लघुकथा भी बहुत हौले से हमारी निर्जीव होती जा रही संवेदना को स्पर्श करती है। इसमें नई पीढ़ी फादर्स डे मनाने के लिए इस कदर उत्साहित होती है कि उसे पुरानी पीढ़ी के अपने पिता ही सेलिब्रेशन में मिसफिट लगने लगते हैं और उनको किसी कोने में बैठने को कह दिया जाता है। कहने की जरूरत नहीं कि ये लघुकथाएं, हमें हमारे समय का प्रतिबिंब, बगैर किसी लाग-लपेट के दिखाने में सक्षम हैं। *

पुस्तकः हवा में बनती हैं नई जगहें (लघुकथा संग्रह), **लेखिकाः** अलका सोनी, **मूल्यः** 150 रुपए, **प्रकाशकः** मेधा बुक्स, दिल्ली

प्राचीन-अनूठी बादामी गुफाएं

कर्नाटक राज्य के उत्तरी भाग के बागलकोट जिले में ऐतिहासिक बादामी नगर में स्थित हैं बादामी गुफाएं और मंदिर। इन गुफाओं का न केवल पौराणिक बल्कि ऐतिहासिक महत्व भी है। इन गुफाओं में मौजूद प्रतिमाएं चालुक्य वंश की शिल्पकला का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जो इतिहासप्रेमी पर्यटकों को मोहित कर लेती हैं।

दर्शनीय स्थल / जगत नारायण भारद्वाज

अगर आप इतिहासप्रेमी पर्यटक हैं तो आपको एक बार कर्नाटक के बादामी नगर में स्थित प्राचीन गुफाओं और मंदिरों को जरूर देखना चाहिए। इन गुफा-मंदिरों में मौजूद प्रतिमाएं, छठी-सातवीं सदी में यहां शासन करने वाले चालुक्य शासकों के दौर की उत्कृष्ट शिल्प कला का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार कर्नाटक का बादामी नगर, महाभारतकालीन असुर राजा वातापी की राजधानी हुआ करती थी। पौराणिक काल के विंध्याचल पर्वत के दक्षिण में स्थित इस दंडकवन में अगस्त्य ऋषि और लोपामुद्रा वास किया करते थे। यहीं पर वातापी और इल्वल दो भाई अपनी संजीवनी विद्या का दुरुपयोग करके ऋषि-मुनियों को तंग करते और कई बार उन्हें मार भी देते थे। एक बार अंजाने में इन दोनों भाइयों ने अगस्त्य ऋषि पर भी आघात करना चाहा। इस पर अगस्त्य ऋषि ने अपने तपोबल से वातापी को उदरस्थ कर नष्ट कर दिया और दंडक वन को उनके अत्याचारों से मुक्त कर दिया। तभी से इसे अगस्त्य तीर्थ भी कहा जाने लगा।

ऐतिहासिक महत्ता: सन 547-757 तक बादामी नगर, चालुक्यवंशी राजाओं की राजधानी रही है। यहां के पराक्रमी सम्राट पुलकेशिन द्वितीय ने ही उत्तर भारत के सम्राट हर्षवर्धन को पराजित किया था। इसी सम्राट पुलकेशिन के पुत्रों मंगलेश और कीर्तिवर्मन ने यहां के पर्वतों को काटकर गुफा और मंदिरों का निर्माण कराया था। वही प्राचीन गुफाएं और मंदिर, बादामी गुफाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मौजूद हैं प्राचीन प्रतिमाएं: यहां प्रमुख रूप से चार गुफाएं हैं। इन 4 गुफाओं में पहली गुफा हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित है, जिसे नटराज गुफा कहा जाता है। इसमें अर्धनारीश्वर, हरिहर रूप और 18 भुजाओं वाली नटराज की प्रतिमा है, जो देश में अन्यत्र नहीं है। नटराज की मूल प्रतिमा, जो तमिलनाडु के चिदंबरम में है, में भी 16 हाथ हैं। इस गुफा में एक मूर्ति ऐसी भी है, जिसे एक ओर से ढंकने पर हाथी और एक ओर से ढंकने पर नंदी की प्रतिमा दिखाई देती है। इन गुफाओं की एक विशेषता यह भी है कि यहां पर प्रतिमाओं के साथ ही शिल्पकारों के नामों को भी उकेरकर उन्हें अमर कर दिया गया है।

एक अन्य गुफा भगवान विष्णु को समर्पित है। इस गुफा में भूदेवी के साथ वराह और वामन अवतार की विशाल प्रतिमाएं बनी हैं। समुद्रमंथन, कृष्णलीला और अन्य पौराणिक आख्यानों के दृश्य भी बहुत सुंदरता से इस गुफा में उकेरे गए हैं। गुफाओं के विशाल स्तंभों पर सुंदर और महीन कलात्मक कारीगरी की गई है। ये कलाकारी इतनी मोहक है कि जिन्हें स्थानीय साड़ियों के निर्माता भी ऐसी डिजाइन की साड़ियां बनवाते हैं। गुफा की ऊपरी छत पर ऐसे स्वास्तिक बने हैं, जिनका प्रारंभ और अंत का भी आभास नहीं होता है। आपने शेषनाग पर शयन करते भगवान विष्णु की प्रतिमा तो देखी होगी लेकिन शेषनाग पर विराजित भगवान विष्णु की प्रतिमा आप यहीं पर देख पाएंगे। यहां 578 ईसवी में निर्मित कन्नड़ लिपि में लिखा गया एक शिलालेख भी है। इसमें मंगलेश द्वारा एक गांव को दान में दिए जाने का उल्लेख है। तीसरी गुफा भी भगवान शिव को समर्पित की गई है। जबकि चौथी गुफा में जैन तीर्थंकरों की विशाल मूर्तियां बनी हैं। इसमें भगवान वर्धमान, महावीर, पार्श्वनाथ तथा बाहुबली की सुंदर प्रतिमाएं सुशोभित हैं।

कुछ ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं कि चालुक्य वंश के शासकों ने पहले शैव, वैष्णव और फिर जैन पंथ को अपनाया। इसीलिए इन गुफाओं में इनकी प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं। यह प्राचीन काल में धार्मिक समन्वय का सशक्त उदाहरण है। शाम के समय में इन गुफाओं की शोभा देखते ही बनती है। इन गुफाओं के कारण ही बादामी नगर विश्व में प्रसिद्ध हुई है। यह स्थल पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है।

अन्य दर्शनीय स्थल: इन बादामी गुफाओं के नीचे अगस्त्य तालाब के दाहिनी ओर आगे चलने पर खंडहरों के प्रतीक आज भी मिलते हैं। यहां पर अनेक चलचित्रों का फिल्मांकन भी हुआ है। गुफाओं के नीचे आने पर अगस्त्य तालाब के किनारे प्राचीन सूर्य मंदिर है। तालाब के एक कोने पर भगवान शिव को समर्पित द्रविड़ शैली में बना भूतनाथ मंदिर समूह है, जिसे 7वीं सदी में बादामी चालुक्यों द्वारा बनवाया गया था। यहां 12वीं सदी में कल्याणी चालुक्यों द्वारा मल्लिकार्जुन मंदिर समूह का निर्माण कराया गया था। भगवान विष्णु और शिव को समर्पित यह मंदिर भी पर्यटकों को आकर्षित करता है। इनके निर्माण की शिल्पकला में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। पास में ही एक भैरव मंदिर है, जिसकी चट्टान पर कई पौराणिक चित्र उकेरे गए हैं। यहीं से चार किमी की दूरी पर बादामी चालुक्यों की कुलदेवी बनशंकरी देवी का मंदिर है, जिसे मां पार्वती का अवतार माना जाता है। इसकी स्थापना अगस्त्य ऋषि ने की थी। मंदिर के पास में ही दर्शनार्थियों के ठहरने की व्यवस्था भी है। यहां गर्मी के मौसम को छोड़कर पूरे वर्ष में कभी भी जाया जा सकता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / अतुल मलिकराम

फील्ड कोई भी हो, बतौर टीम लीडर काम करने की ख्वाहिश प्रायः सभी को होती है। लेकिन टीम लीडर के रूप में सक्सेसफुल होने के लिए अपने काम में एक्सपर्ट होने के साथ ही आपके अंदर कुछ लीडरशिप क्वालिटीज का होना भी जरूरी है। क्या हैं वो क्वालिटीज, जानिए।

ये क्वालिटीज बनाएंगी सक्सेसफुल टीम लीडर

महात्मा गांधी की इस उक्ति 'आप खुद के भीतर वह बदलाव लाएं, जो आप लोगों में देखना चाहते हैं।' को अच्छे लीडरशिप के सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। एक अच्छे लीडर में कुछ मूलभूत गुणों का होना आवश्यक है। आत्मविश्वास, संचार कौशल, दूरदर्शिता, निर्णय क्षमता, ईमानदारी आदि गुणों की अपेक्षा एक टीम लीडर से की जाती है। एक अच्छा लीडर ऐसे निर्णय लेता है, जो उसकी टीम या संगठन के हित में हो।

पॉजिटिव एटिट्यूड: एक टीम लीडर के रूप में जरूरी है कि आप अपना एटिट्यूड हमेशा पॉजिटिव रखें। आप अपने टीम मेंबर्स को आगे बढ़ने में हमेशा मदद करें। आपके डिसिजंस ऐसे होने चाहिए, जिसे आपकी टीम बेझिझक स्वीकार करती हो। एक अच्छे टीम लीडर के रूप में आपको अपनी टीम की हर जरूरत की जानकारी होनी चाहिए। साथ ही टीम मेंबर्स के हार्ड वर्क और अचीवमेंट्स के लिए उन्हें रिवॉर्ड भी जरूर देना चाहिए। एक टीम लीडर के रूप में विश्वास रखें कि आपकी टीम मजबूत है, यहां हर कोई अपनी भूमिका अच्छे से निभाना जानता है और अपना टार्गेट अचीव करने की क्षमता रखता है।

बढ़ाएं टीम मेंबर्स का हौसला: एक अच्छे टीम लीडर को चाहिए कि वह अपने टीम मेंबर्स को, अपने कुलीग्स को हमेशा मोटिवेट करता रहे। आगे बढ़कर नेतृत्व करने का गुण या सार्थक नेतृत्व हमेशा ही लीडर की परछाई के समान साथ-साथ चलता है। एक लीडर के रूप में आपका पॉजिटिव बिहेवियर और लीडरशिप टीम मेंबर्स को अधिक गहराई से और पूरी तरह से बदलने की ताकत रखता है। यदि आप चाहते हैं कि आपकी टीम अधिक सकारात्मक हो, तो सबसे पहले आपको सकारात्मक रवैया अपनाना होगा। यदि आप चाहते हैं कि टीम मेंबर्स अपने काम को बिना किसी गलती के बेहतरी से पूरा करें, तो आपको उनके ऊपर विश्वास रखना होगा और उनके भीतर आत्मविश्वास जगाना होगा। उनकी कम्युनिकेशन स्किल्स और अपीयरेंस आदि पर विशेष तौर पर ध्यान दें और बेझिझक उन्हें सही सलाह देते रहें। साथ ही आपको चाहिए कि आप उनकी मदद करें और उनका हौसला बढ़ाते रहें।

स्वयं बनें उदाहरण: अगर आप चाहते हैं कि आपके टीम मेंबर्स समय से कार्यस्थल पर आएं और अपना हर काम समय पर पूरा करें, तो पहले आपको स्वयं समय से पहले या समय से वर्कप्लेस पर आने की आदत डालनी चाहिए। आप उन्हें वक्त की पाबंदी के फायदे बताएं। अपना और अपनी सफलता का उदाहरण देकर उन्हें समझाएं। याद रखिए, सफल नेतृत्व के तीन सबसे कारगर सिद्धांत हैं- उदाहरण, उदाहरण और उदाहरण। आप अपनी टीम के लिए कितना बड़ा और प्रभावी उदाहरण बन सकते हैं या पेश कर सकते हैं, यह आप पर निर्भर करता है। लेकिन यकीन मानिए, आपके ऐसा करने का आपकी टीम पर बहुत पॉजिटिव इफेक्ट पड़ेगा। *

चिंता / के.पी. सिंह

विलुप्ति की कगार पर सोन चिरैया

सोन चिरैया यानी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, भारत के समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा रही है। यह पक्षी मुख्य रूप से राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात के कच्छ क्षेत्र में और कर्नाटक व आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में पाए जाते हैं। कभी बहुतायत में पाई जाने वाली सोन चिरैया धीरे-धीरे लुप्त होने की कगार पर है।

अनोखी शारीरिक संरचना: सोन चिरैया का वैज्ञानिक नाम 'अर्देवोटिस निग्रिसेप्स' है। इसे हिंदी में सोन चिरैया, मराठी में माढोक और राजस्थानी में गोडावण कहते हैं। सोन चिरैया लगभग एक मीटर ऊंची होती है, इनमें नर का वजन आमतौर पर 11 से 15 किलो होता है, जबकि मादा 4 से 7 किलो की ही होती है। इसके सिर के ऊपरी भाग में एक काली टोपी नुमा संरचना होती है। गर्दन स्पष्ट रूप से भूरे रंग की होती है। यह मानसून के दौरान प्रजनन करती है। नर सोन चिरैया में प्रजनन काल के दौरान गले पर पाउच जैसी संरचना उभर आती है। नर, मादा को बुलाने के लिए अपने पाउच से एक विशेष किस्म की आवाज निकालता है। सोन चिरैया सुबह और शाम के समय सक्रिय रहती है। दिन के समय यह प्रायः निष्क्रिय रहती है।

अत्यंत संकटग्रस्त: चिंताजनक बात यह है कि गीतों, कविताओं और लोककथाओं की शान रही भारत की यह खास चिड़िया लुप्त होने की कगार पर पहुंच गई है। आईयूसीएन की रेड डाटा लिस्ट में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड को अत्यंत संकटग्रस्त प्रजाति की श्रेणी में रखा गया है।

लुप्त होने के कारण: सोन चिरैया के लुप्त होने के अनेक कारण हैं। पहले इसका आवास घास के मैदानों और खेतों के बीच होता था, लेकिन अब घास के मैदान और खेत कम होने से इसके आवास की समस्या पैदा हो गई है। एक कारण यह भी है कि यह साल में केवल एक अंडा देती है और उसे भी जमीन पर देती है, जिसे आमतौर पर कुत्तों, लोमड़ियों या अन्य पशुओं द्वारा नष्ट कर दिया जाता है। अपनी कमजोर दृष्टि के कारण ये कांटों, बिजली के तारों आदि में फंसकर मरे जाते हैं।

संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयास: सोन चिरैया के संरक्षण के लिए आईयूसीएन, केंद्र एवं राज्यों द्वारा विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। मसलन, इसके शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। जैसलमेर के सुधासरी और रामदेवरा में इन्हें सुरक्षित आवासों में रखकर प्रजनन करवाया जाता है। इन सबके अलावा एनजीओ, वैज्ञानिक और स्थानीय समुदाय के लोग भी सोन चिरैया के संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं। *

लाइफस्टाइल / शिखर चंद जैन

बेहतर शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छी नींद बहुत जरूरी है। इसीलिए दुनिया भर में लोग अच्छी नींद के लिए तरह-तरह की तरकीबें अपनाते हैं।

अच्छी नींद के लिए अजब-गजब उपाय

कई शोध ऐसे हो चुके हैं, जिनमें अच्छी नींद को मानसिक और शारीरिक सेहत के लिए बेहद जरूरी बताया गया है। अच्छी नींद के लिए चिकित्साविज्ञानी तरह-तरह के उपाय भी बताते रहे हैं, जैसे अंधेरे कमरे में सोना, ठंडे बेडरूम में सोना, बेड टाइम पर स्क्रीन से दूर रहना, रेग्युलर एक्सरसाइज करना आदि। लेकिन इन सब से हटकर दुनिया के विभिन्न देशों में लोग अच्छी नींद के लिए कुछ अलग तरह के उपायों को भी अपनाते हैं।

सोने से पहले पैर धोना: चीन में अच्छी, लंबी और गहरी नींद के लिए लोग गर्म पानी में पैर डुबोते हैं और एक्सफोलिएशन भी करते हैं। इससे हाइजीन के साथ-साथ ब्लड सर्कुलेशन भी दुरुस्त होता है और ब्लड वेसल्स भी ब्लॉक नहीं होती हैं। पैर गर्म रहने और बॉडी टेंपरेचर कम होने से नींद जल्दी आती है। यहां कुछ लोग फुट मसाज और स्पा ट्रीटमेंट लेते हैं। अरोमाथेरेपी लेते हैं और पैरों में गरम तौलिया भी लपेटते हैं। इससे उनकी दिन भर की थकान दूर हो जाती है और सुकून की नींद आती है।

कपल्स लेते हैं स्लीप डाइवोर्स: अमेरिका में अच्छी नींद के लिए कपल्स स्लीप डाइवोर्स का आइडिया अपनाते हैं। इसके तहत पार्टनर अलग-अलग बेड पर सोते हैं। कई कपल तो अलग-अलग रूम में भी सोते हैं ताकि नींद में खलल न पड़े।

पेट्स के साथ सोना: एक सर्वे के मुताबिक कनाडा के डॉग ऑनर्स में से कम से कम 75 फीसदी लोग अपने कुत्ते के साथ बेडरूम में सोना पसंद करते हैं, जबकि बिल्ली पालने वालों में से कम से कम 50 फीसदी लोग बिल्लियों को साथ लेकर सोते हैं। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूके में कम से कम 65 फीसदी लोग अपने पालतू के साथ सोते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि अपने पालतू पशुओं के साथ सोने से अच्छी और बेफिक्र नींद आती है। यूनिवर्सिटी आफ टोरंटो में इवोल्यूशनरी एंथ्रोपोलॉजी के एसोसिएट प्रोफेसर डेविड सैमसंग कहते हैं कि डॉग का साथ इंसान को सुरक्षा का एहसास देता है। यही वजह है कि अपने पेट डॉग के साथ लोग निश्चिंत और बेफिक्र होकर सोते हैं।

तकिए के नीचे डॉल रखकर सोना: ग्वाटेमाला में पुरानी परंपरा है कि लोग अपने तकिए के नीचे एक छोटी-सी डॉल रखकर सोते हैं, जिसका नाम है- वरी डॉल। मान्यता है कि वरी डॉल लोगों की चिंता या डर को दूर करती है। इससे उन्हें काफी कंफर्ट महसूस होता है। कई मनोवैज्ञानिकों और स्लीप एक्सपर्ट्स द्वारा किए गए अध्ययन में पता चला है कि इन वरी डॉल्स की उपस्थिति से लोगों का एंजायटी लेवल काफी कम हो जाता है, जिससे उन्हें अच्छी नींद आती है। *

हिंदी और साउथ फिल्म इंडस्ट्री में मैडी के नाम से पॉपुलर एक्टर आर. माधवन की रोमांटिक फिल्म 'आप जैसा कोई' 11 जुलाई को रिलीज हो रही है। इस अलग-सी रोमांटिक फिल्म को उन्होंने क्यों एक्सेप्ट किया? इसके लिए उन्हें कैसी तैयारियां करनी पड़ीं? इस फिल्म, करियर और पर्सनल लाइफ से जुड़ी बातें आर. माधवन से।

मनोरंजन का कामयाब जरिया बन गया है ओटीटी: आर. माधवन

मुलाकात / पूजा सामंत

आर. माधवन हिंदी और साउथ फिल्म इंडस्ट्री में समान रूप से एक्टिव हैं। वे एक अच्छे एक्टर होने के साथ-साथ सहज, मिलनसार और डाउन टु अर्थ इंसान भी हैं। वर्ष 2001 में रिलीज 'रहना है तेरे दिल में' बतौर लीड एक्टर माधवन की पहली हिंदी फिल्म थी। हमेशा चुनिंदा फिल्मों में नजर आने वाले माधवन, नेटफ्लिक्स की रोमांटिक फिल्म 'आप जैसा कोई' में फातिमा सना शेख के साथ नजर आएंगे। इस फिल्म को निर्देशित किया है विवेक सोनी ने। पेश है आर. माधवन से इस फिल्म और करियर पर हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

आपकी फिल्म 'आप जैसा कोई' रिलीज हो रही है। इस फिल्म के बारे में कुछ बताइए। इस रोमांटिक फिल्म को करने के पीछे क्या वजह रही?

लेखक-निर्देशक विवेक सोनी ने जब मुझे फिल्म की कहानी सुनाई तो मुझे इस प्रेम कहानी का अनोखापन बहुत पसंद आया। प्रेम के रिश्ते में लड़का-लड़की दोनों एक ही लेवल पर होते हैं। न लड़का खुद को ग्रेट समझे, न लड़की। यह इक्कीसवीं सदी की प्रेम कहानी है। बिल्कुल इस दौर की कहानी। प्रेम के रिश्ते में लड़की अगर प्यार की पहल करे तो क्या बुराई है? फिल्म का हीरो यानी मैं संस्कृत सिखाने वाला प्रोफेसर हूं। मेरी शादी 40 की उम्र तक नहीं होती है। मेट्रीमोनियल वेबसाइट पर मेरी मुलाकात एक युवती (फातिमा सना शेख) से होती है, जो काफी मॉडर्न खयालात की है। उसे मेरे घर के लोग मना कर देते हैं। फिर क्या होता है? क्या हमारा रिश्ता आगे बढ़ता है? इसके इर्द-गिर्द फिल्म की कहानी घूमती है। मुझे यह प्लॉट, मेरा किरदार (श्रीरेणु) सब बहुत पसंद आया।

'आप जैसा कोई' के एक दृश्य में आर. माधवन और फातिमा सना शेख

श्रीरेणु का किरदार निभाने के लिए आपको किस तरह की तैयारियां करनी पड़ीं?

मेरी रियल एज 55 साल है। लेकिन फिल्म में मेरा किरदार श्रीरेणु 40 के आस-पास का है। मुझे अपनी उम्र से 15 वर्ष कम का दिखना था। इसके लिए मैंने जिम जाकर काफी वर्कआउट किया। स्क्रीन पर उम्र कम दिखे इसलिए मुझे अपनी दाढ़ी हटानी पड़ी, क्लीन शेव रखनी पड़ी। हालांकि मैं अपना दाढ़ी वाला लुक बदलना नहीं चाहता था। मेरे लिए यह बड़ा बदलाव था। फिल्म में मेरे कैरेक्टर की साइकोलॉजी को समझना था। कुल मिलाकर मुझे इस कैरेक्टर के लिए खुद को तैयार करने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

इस फिल्म में अधेड़ उम्र के पुरुष का प्यार दिखाया गया है। आपकी नजर में क्या समाज ऐसे प्यार को स्वीकार करता है?

समाज का क्या है, वो तो हर कंडीशन में कुछ न कुछ कहता ही रहता है। दंपति में उम्र का फासला ज्यादा हो तो दिक्कत, उम्र एक सी हो दोनों की तो भी कहने वाले कहते रहेंगे, पति-पत्नी की हाइट में बहुत फर्क हो तो भी कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना। लेकिन मेरा मानना है कि अब सामाजिक परिवर्तन हो रहा है, स्वीकार्यता बढ़ रही है।

सुना है, 'आप जैसा कोई' फिल्म की शूटिंग के दौरान आप जमशेदपुर स्थित अपने पुश्तैनी घर भी गए थे, कैसा रहा वहां जाने का अनुभव?

जमशेदपुर में मेरा जन्म हुआ था। कई वर्षों तक मेरा वहां जाना नहीं हुआ। जब इस फिल्म की शूटिंग उस इलाके (हुगली) में हो रही थी तो मैं टाइम निकालकर अपने पुश्तैनी घर जमशेदपुर गया। बचपन में जो घर मुझे बहुत बड़ा लगता था, इस बार छोटा नजर आया। जो लोग मेरे पड़ोस में थे, अब उनमें से शायद ही कोई वहां था। मैंने वहां आइसक्रीम, स्वीट्स को एंज्वॉय किया। अपने पुराने घर की ढेर सारी यादों को साथ लेकर मैं वापस आया।

आपने टीवी से डेब्यू किया था। फिर आपने साउथ, हिंदी, अंग्रेजी फिल्मों में काम किया। और अब 'आप जैसा कोई' फिल्म से आप ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एंट्री कर रहे हैं। इस बारे में क्या कहना चाहेंगे आप?

सभी जानते हैं, ओटीटी आज के दौर में मनोरंजन का बेहद कामयाब जरिया है। यहां फिल्में भी आती हैं, डॉक्यूमेंटरी सीरीज और वेब सीरीज भी। अब कलाकारों के लिए यह मायने नहीं रखता कि वे किस प्लेटफॉर्म के लिए काम करते हैं। अच्छे मौके आए तो बॉलीवुड क्या, हॉलीवुड क्या, ओटीटी क्या और टीवी क्या? किस माध्यम के लिए मैं कंटेंट बना रहा हूं यह मेकर को अहसास हो, तो वो उस माध्यम का लाभ उठाकर उम्दा कंटेंट दे सकता है। बहरहाल, मैं इस वर्ष बड़े परदे यानी सिनेमा के लिए भी काम कर रहा हूं। 'दे दे प्यार दे 2' और 'धुरंधर' मेरी दो फिल्में इसी वर्ष रिलीज होंगी। *

मैं ये सब नहीं कर सकता

आर. माधवन इतनी अच्छी एक्टिंग कर लेते हैं लेकिन क्या कुछ ऐसे काम भी हैं, जो वह नहीं कर सकते? पूछने पर वह बताते हैं, 'मैं फूडी हूं इसलिए डाइटिंग नहीं कर सकता। मुझे आंकड़ों से नफरत है। मैं अपने फाइनेंसियल मैटर्स को मैनेज नहीं कर सकता, मेरी पत्नी सरिता यह काम संभालती हैं। सरिता ने मुझे क्रेडिट कार्ड दे रखा है। मैं अपने जरूरी खर्चे क्रेडिट कार्ड से चला लेता हूं। कैश खोने का डर रहता है। मेरे जितने भी बैंक अकाउंट्स हैं, वो सरिता के नाम पर हैं। मेरी हमसफर के अलावा वो मेरी कैशियर, बैंक मैनेजर भी है।'